04 - जाकिर हुसैन- संगीत का प्रेरणादायक सफर

05 - पिंक आयरन- भावों, विचारों एवं रंगों का सधा हुआ संगम

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 9 मार्च, 2025

06 - दिन में खिल रही तेज धूप, सुबह-शाम ठंड, मौसम में बदलाव...

07 - किस गंभीर बीमारी से जूझ रही आलिया

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 181, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

पलाश का खिलना जीवन का उल्लास है...

फोटो : प्रवीण वाजपेयी

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

सुप्रभात

बचपन में बच्चे खूब हँसते हैं।
मैं भी खूब हँसती थी।
बड़ी होती गई तो देखा
मंदिर, स्कूल, ऑफिस और
बड़ी सभाओं में लोग
गंभीर मुखमुद्रा में रहते हैं।
वहाँ का मौसम कहता है चुप्प !
जैसे काम और हँसी का बैर हो।
धीरे - धीरे हँसना बंद हो गया।
अब हँस पाती हूँ खुलकर
साल में कोई एकाध बार।
बस, फोटो खिंचवाते समय
फोटोग्राफर कहता है
हँसो, हँसो।
मैं नकली हँसी हँसती हूँ।
हर हँसती फोटो को
तुम ध्यान से देखना
उसके पीछे छुपा तुम्हें
एक गंभीर चेहरा दिखाई देगा।
खैर-
बाजार में अब बहुत
तरह के खिलौने मिलते हैं।
मैं भी एक गुड्डा खरीद लाई हूँ
जिसके पेट में गुदगुदी करो
तो वो हँसता है।

– अनुपमा तिवाड़ी

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में अब खेली जाएगी होली

हो गया फैसला, मैनेजमेंट ने पहले छात्रों को नहीं दी थी मंजूरी

अलीगढ़ (एजेंसी)। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में होली खेलने की मंजूरी छात्रों को अब दे दी गई है। मैनेजमेंट द्वारा पहले इसकी इजाजत नहीं मिली थी और उस वजह से काफी विवाद भी देखने को मिला था। लेकिन अब 13 और 14 मार्च को होली खेलने की इजाजत मिल गई है। पहले छात्र चाहते थे कि उन्हें 9 मार्च को आयोजन करने की परमीशन मिल जाए। छात्रों के मुताबिक उन्होंने बकायदा मांग के साथ एक चिट्ठी भी लिखी थी लेकिन पहले उस मांग को नहीं माना गया। एक प्रोफेसर ने तो यहां तक कह दिया था कि छात्र अपने रूम के अंदर होली मना सकते हैं, पहले भी ऐसे मनाते आ रहे हैं। लेकिन इस बात का काफी विवाद हुआ, कुछ नेताओं ने इसे हिंदू आस्था के साथ भी जोड़ दिया। प्रशासन को अपने कदम ही पीछे खींचने पड़े।

● गुजरात के नवसारी में पीएम मोदी ने डेढ़ लाख लखपति दीदियों से की बात, कहा-

मैं दुनिया में सबसे अमीर, मेरे खाते में करोड़ों माताओं-बहनों का आशीर्वाद

नवसारी (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर गुजरात के नवसारी पहुंचे। खुली जीप में हेलीपैड से करीब 700 मीटर का रोड शो करते हुए वे कार्यक्रम स्थल पहुंचे।

यहां उन्होंने डेढ़ लाख लखपति दीदियों से बात की। पीएम ने कहा- मैं दुनिया का सबसे अमीर व्यक्ति हूं। क्योंकि, मेरे जीवन के खाते में करोड़ों माताओं-बहनों और बेटियों का आशीर्वाद जमा है। ये आशीर्वाद लगातार बढ़ता ही जा रहा है। इससे पहले मुझे महाकुंभ में मां गंगा का आशीर्वाद मिला है और आज मातृशक्ति का आशीर्वाद मिला है। लाखों मुस्लिम महिलाओं की जिंदगी बर्बाद होने से बचाई

पीएम ने कहा- अनुच्छेद 370 हटने के बाद जम्मू-कश्मीर में महिलाओं को सभी अधिकार मिल गए हैं। पहले वहां महिलाएं मूलभूत सुविधाओं से वंचित थीं। पिछली सरकार को इसकी कोई चिंता नहीं थी। हमने सरकार में आते ही सबसे पहले उन महिलाओं के लिए काम किया। इसके अलावा हमारी सरकार ने तीन तलाक के खिलाफ सख्त कानून बनाकर लाखों मुस्लिम महिलाओं की जिंदगी बर्बाद होने से बचाई। मातृत्व अवकाश 26 हफ्ते का किया पीएम ने कहा- चाहे सामाजिक क्षेत्र हो या खेल का मैदान, महिलाएं देश के हर क्षेत्र में मौजूद हैं। 2014 के बाद से देश में महत्वपूर्ण पदों पर महिलाओं की भागीदारी तेजी से बढ़ी है। केंद्र सरकार में सबसे ज्यादा महिला मंत्री, 2019 में पहली बार हमारी संसद में 78 महिला सांसद चुनी गईं हैं। कामकाजी महिलाओं को पहले सिर्फ 12 हफ्ते का मातृत्व अवकाश मिलता था। हमारी सरकार ने इसे 26 हफ्ते कर दिया है। महिलाओं के श्रम से देश का विकास हुआ पीएम ने कहा- आज के कार्यक्रम की सारी जिम्मेदारी महिलाओं ने अपने ऊपर ली। यह महिलाओं के ऊंचे आत्मविश्वास को दर्शाता है। भारत महिला नेतृत्व का एक महान उदाहरण है।

कुशाभाऊ ठाकरे कन्वेंशन सेंटर में महिला दिवस पर मुख्यमंत्री का ऐलान

प्रदेश में धर्मांतरण कराने वालों को होगी फांसी

भोपाल (नप्र)। शनिवार को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर भोपाल के कुशाभाऊ ठाकरे कन्वेंशन सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि धर्मांतरण कराने वालों को फांसी की सजा का प्रावधान करने जा रहे हैं।

सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा- मासूम बेटियों के साथ दुराचार करने वाले मामले में सरकार बहुत कठोर है। इस संबंध में फांसी का प्रावधान किया गया है। जोर जबरदस्ती से बहला फुसलाकर जो दुराचार करेगा, हमारी सरकार उसको छोड़ने वाली नहीं है। किसी हालत में ऐसे लोगों को जीवन जीने का अधिकार नहीं देना चाहते।

धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम के

माध्यम से, जो धर्मांतरण कराएंगे उनके लिए फांसी का प्रबंधन हमारी सरकार द्वारा किया जा रहा है। किसी हालत में न तो धर्मांतरण, न दुराचरण चलेगा, सरकार ने संकल्प लिया है कि इनके साथ कठोरता से पेश आएंगे।

लाड़ली बहनों के खातों में 1552.73 करोड़ रुपए की राशि ट्रांसफर- कार्यक्रम में उन्होंने 1.27 करोड़ महिलाओं के खाते में लाड़ली बहना योजना के 1250 रुपए ट्रांसफर किए। सिंगल क्लिक में मार्च 2025 की लगभग 1552.73 करोड़ रुपए की राशि ट्रांसफर की गई है। उज्ज्वला योजना की गैस कनेक्शनधारक महिलाओं के खाते में डीबीटी के जरिए भी राशि ट्रांसफर की गई। इस दौरान सीएम की सुरक्षा और अन्य व्यवस्थाओं की कमान महिला अधिकारियों के हाथों सौंपी गई। सीएम ने महिलाओं और बच्चों के क्षेत्र में समाज सेवा, सुरक्षा, वीरता और साहसिक कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मानित किया।

नारी सशक्तिकरण को लेकर जो भी हो सकता है कर रहे, गैस रिफिलिंग के लिए राशि ट्रांसफर की

सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा, महिला बाल विकास, पुलिस विभाग और ग्रामीण एवं पंचायत विभाग का संयुक्त आयोजन किया गया। इसमें नई योजनाओं की प्रगति रिपोर्ट पेश की गई। महिलाओं की नियुक्ति के प्रमाण पत्र दिए गए। सीहोर में पायलट प्रोजेक्ट के तहत 200 से ज्यादा ई-साइकिल दी गईं। लाड़ली बहनों और उज्ज्वला गैस कनेक्शनधारी महिलाओं को राशि ट्रांसफर की गई। मुझे बताया गया है कि स्व-सहायता समूह के माध्यम से हमारे प्रदेश में लखपति दीदियां बनी हैं। नारी सशक्तिकरण को लेकर जो भी हो सकता है हमारी सरकार कर रही है।

प्रदेश में 5 लाख से ज्यादा लखपति दीदियां

सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा, महिला बाल विकास, पुलिस विभाग और ग्रामीण एवं पंचायत विभाग का संयुक्त आयोजन किया गया। इसमें नई योजनाओं की प्रगति रिपोर्ट पेश की गई। महिलाओं की नियुक्ति के प्रमाण पत्र दिए गए। सीहोर में पायलट प्रोजेक्ट के तहत 200 से ज्यादा ई-साइकिल दी गईं। लाड़ली बहनों और उज्ज्वला गैस कनेक्शनधारी महिलाओं को राशि ट्रांसफर की गई। मुझे बताया गया है कि स्व-सहायता समूह के माध्यम से हमारे प्रदेश में लखपति दीदियां बनी हैं। नारी सशक्तिकरण को लेकर जो भी हो सकता है हमारी सरकार कर रही है।

चैम्पियंस ट्रॉफी के फाइनल मुकाबले में भिड़ेंगे भारत और न्यूजीलैंड

बल्ला बोलेगा या गेंदबाज चमकेंगे, फैसला आज

● रोहित की कप्तानी में लगातार चौथा आईसीसी फाइनल खेलेगा भारत

दुबई (एजेंसी)। रोहित शर्मा की कप्तानी में टीम इंडिया आईसीसी टूर्नामेंट में लगातार चौथा फाइनल खेलेगी। चैंपियंस ट्रॉफी फाइनल में 9 मार्च को भारत का सामना दुबई में न्यूजीलैंड से होगा। रोहित टी-20 वर्ल्ड कप के रूप में एक ही खिताब जिता सके, उन्हें वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप और वनडे वर्ल्ड कप फाइनल में हार मिली। टीम इंडिया लगातार तीसरी बार चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में पहुंची है। टीम ने 2013 में खिताब जीता, लेकिन 2017 में पाकिस्तान के खिलाफ हार मिली। अब रोहित की कप्तानी में टीम के पास 12 साल बाद इस आईसीसी खिताब को जीतने का मौका है। रोहित

शर्मा ने 2 टी-20 वर्ल्ड कप, 1 वनडे वर्ल्ड कप, 1 वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप और 1 चैंपियंस ट्रॉफी में भारत की कप्तानी की। इन 5 टूर्नामेंट में भारत ने 30 मैच खेले, 26 जीते और महज 4 में टीम को हार मिली। हालांकि रोहित ने जो 4 मैच गंवाए, उनमें से 3 मुकाबले नॉकआउट स्टेज में रहे। इनमें भी 2 हार फाइनल में मिलीं। केवल 1 बार उन्हें एक ही टूर्नामेंट में 2 हार मिली, यह टूर्नामेंट 2022 का टी-20 वर्ल्ड कप था। तब टीम को ग्रुप स्टेज में साउथ अफ्रीका और सेमीफाइनल में इंग्लैंड ने हरा दिया था। आईसीसी के 4 टूर्नामेंट होते हैं, वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप, वनडे वर्ल्ड कप, टी-20 वर्ल्ड कप और चैंपियंस ट्रॉफी। इनमें भारत के सबसे सफल कप्तान एमएस धोनी हैं। जिन्होंने टीम को 69 फीसदी मैच जितावाए हैं।

वृहद कल्पनाओं से भरी थी मेघ के मृदंग नृत्य नाटिका

उज्जैन में विक्रमोत्सव

उज्जैन से डॉ. जफर महमूद

विक्रमोत्सव के अंतर्गत उज्जयिनी नृत्य नाट्य समारोह के दूसरे दिन सुप्रसिद्ध नृत्यांगना समीक्षा शर्मा एवं साथी कलाकारों द्वारा मेघ के मृदंग नृत्य नाटिका को प्रस्तुत किया गया।

प्रस्तुति में मेघ के माध्यम से जीवन के विभिन्न आयामों को प्रकट किया गया। नृत्य में जिंदगी में घटने वाली छोटी-बड़ी, घटनाओं को मोहकता के साथ प्रस्तुत किया गया। सुख-दुख, आशा-उमंग और संत्रास के साथ व्यक्ति के सामाजिक दायित्व और देश के नव निर्माण में समवेत संकल्पों को छंदात्मक पृष्ठभूमि के साथ प्रस्तुती में पिरोया गया । मेघ को केन्द्रित करते हुए बहुत सी नई उद्भावनाएँ इस नृत्य नाट्य में प्रेक्षकों के समक्ष रसात्मक रूप में प्रस्तुत की गयी। मेघों के वृहद कल्पनाओं की इस प्रस्तुति में साहित्य और नृत्य दोनों का समावेश किया गया। नृत्य प्रस्तुति मेंविशेष ध्यान रखा गया कि साहित्य और नृत्य दोनों का सम्मान बरकरार रहे।

समीक्षा शर्मा शास्त्रीय नृत्य कथक की संभावना पूर्ण कलाकार हैं। युवा कथक कलाकारों की श्रेणी में उन्होंनेअपनी साधना से एक अलग पहचान बनाई है। एक ओर वह अच्छी नृत्यांगना हैं, वहीं दूसरी ओर शास्त्रीय पक्ष की समझ रखती हैं।

प्रस्तुत नृत्य नाट्य को ब्रजेन्द्र शरण श्रीवास्तव ने लिखा है। समीक्षा शर्मा के साथ गायन एवं हारमोनियम पर शोएब, तबले पर जाकिर, बांसुरी पर अतुल शंकर, सितार पर महराब अली, सारंगी पर अमीर खान और डोलक पर विवेक धवन ने सुसंगत की। साथी कलाकारों में महिमा यादव, मुस्कान शर्मा, अवनी बालिया, ईशा व्यास, सुमित कुमार व मयंक पटवा ने नृत्य नाटिका को साकार किया। लोक नृत्य कलाकारों में विंती जैन, भावना कटारिया, विधि शर्मा, शेफाली, मयूरी डोड व विनोद राठौड़ शामिल थे। तकनीकी सहयोग मनन तथा प्रकाश व्यवस्था अतुल मिश्रा ने संभाली। कार्यक्रम का संचालन डॉ. वैशाली शुक्ला ने किया।

उज्जयिनी नृत्य नाट्य समारोह

पौराणिकता को प्रस्तुत करती उज्जयिनी गाथा

विक्रमोत्सव के कार्यक्रमों की श्रृंखला में उज्जयिनी नृत्य नाट्य समारोह के अन्तर्गत उज्जयिनी गाथा का मंचन हुआ। प्रस्तुति में शास्त्रीय, कथक एवं भरतनाट्यम को मालवी लोकनृत्य शैली में समाहित कर अनूठा बनाया गया था। प्रस्तुती में उज्जयिनी के पुरातनकाल के इतिहास से लेकर आधुनिक उज्जैन तक का वर्णन था। उज्जैन की ख्यातनाम नृत्य गुरु पल्लवी किशन द्वारा निर्देशित प्रस्तुति में उज्जयिनी की पौराणिकता,त्रिपुरासुर वध, महाकाल की स्थापना, मातासती का भस्म होना, हरसिद्धि की स्थापना, समुद्र मंथन की कथा, सिंहस्थ महापर्व का वर्णन, गुरू सांदीपनि महिमा तथा श्रीकृष्ण की शिक्षा, उज्जैन और सम्राट विक्रमादित्य जैसे विषयों को नृत्य, नाट्य, संगीत के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 9 मार्च 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

तकनीक को साधन बनाएं साध्य नहीं : सुरेश सोनी

विद्या भारती पूर्णकालिक कार्यकर्ता वर्ग का समापन

भोपाल। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के अखिल भारतीय पूर्णकालिक कार्यकर्ता वर्ग का भव्य समापन सरस्वती शिशु मंदिर, शारदा विहार में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य सुरेश सोनी ने कार्यकर्ताओं को प्रेरणादायी मार्गदर्शन प्रदान किया।

समारोह के दौरान विद्या भारती के अखिल भारतीमेंय अध्यक्ष श्री दूसी रामकृष्ण राव ने पांच दिवसीय अभ्यास वर्ग (03 से 08 मार्च) की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रारंभ में डॉ. राम कुमार भावसार ने अतिथियों का परिचय कराया, जबकि प्रांत अध्यक्ष मोहन लाल गुप्ता एवं सचिव डॉ. शिरोमणि दुबे ने स्वागत किया। देशभर से आए 700 से अधिक पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं ने इस अभ्यास वर्ग में भाग लिया, जिनमें विद्या भारती के शीर्ष पदाधिकारी भी सम्मिलित रहे।

मुख्य वक्ता सुरेश सोनी ने कहा कि विद्या भारती के पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं की भूमिका केवल व्यक्तिगत या सांगठनिक स्तर तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि समाज और विशेष रूप से शिक्षा जगत में प्रभावी हस्तक्षेप आवश्यक है। उन्होने

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के बढ़ते प्रभाव और उससे उत्पन्न चुनौतियों पर चर्चा करते हुए कहा कि तकनीक की प्रगति से मशीनों की क्षमता बढ़ रही है, लेकिन इसके दुष्प्रभावों के चलते मानव की शारीरिक एवं मानसिक क्षमताएँ प्रभावित हो रही हैं। सोनी ने कहा कि तकनीक हमें जोड़ सकती है, लेकिन संबंध स्थापित नहीं कर सकती।तकनीक को साधन बनाएं, साध्य नहीं।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अपने उद्बोधन में भगवान राम और लक्ष्मण पर महर्षि विश्वामित्र के विश्वास का उदाहरण प्रस्तुत किया। मुख्यमंत्री ने भारतीय सांस्कृतिक विरासत को सम्मान देने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण घोषणा करते हुए कहा कि भोपाल नगर में दो प्रमुख द्वारों का निर्माण किया जाएगा–एक राजा भोज के नाम पर, दूसरा राजा विक्रमादित्य के नाम पर यह निर्णय देश के गौरवशाली इतिहास और परंपरा को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम बनेगा। विद्या भारती के इस अखिल भारतीय पूर्णकालिक कार्यकर्ता वर्ग में विचार, व्यवहार एवं संगठनात्मक कार्यशैली पर गहन मंथन हुआ। कार्यक्रम समापन पर विद्या भारती के अखिल भारतीय महामंत्री अवनीश भटनागर ने आभार प्रदर्शन किया।

भोपाल में टॉर्च जलाकर निकाला मार्च

आदिवासी नाबालिग से दुष्कर्म के विरोध में एनएसयूआई का प्रदर्शन

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में महिलाओं और बच्चियों के खिलाफ बढ़ते अपराधों को लेकर प्रदेशभर में रोष व्याप्त है। हाल ही में एबीबीपी के पूर्व संगठन मंत्री पर आदिवासी नाबालिग बच्ची से बलात्कार का आरोप लगा, जिससे भारी आक्रोश है। इस जघन्य अपराध के विरोध में मध्यप्रदेश एनएसयूआई ने प्रदेशाध्यक्ष आशुतोष चौकसे के नेतृत्व में प्रदर्शन किया। प्रशासन द्वारा मशाल जुलूस निकालने की अनुमति नहीं मिलने के बावजूद, कार्यकर्ताओं ने मोबाइल की फ्लैश लाइट जलाकर विरोध जताया और सरकार के खिलाफ नारेबाजी की।

एनएसयूआई प्रदेशाध्यक्ष आशुतोष चौकसे ने कहा, यह घटना न केवल शर्मनाक है, बल्कि प्रदेश सरकार और प्रशासन की विफलता को भी

उजागर करती है। भाजपा और उसकी छात्र इकाई एबीवीपी के लोग आदिवासी बच्चियों की अस्मिता को तार-तार कर रहे हैं, और सरकार चुप्पी साधे बैठी है।÷ उन्होंने चेतावनी दी कि यदि आरोपी को जल्द गिरफ्तार कर फास्ट ट्रैक कोर्ट में कठोर सजा नहीं दिलाई गई, तो प्रदेशभर में उग्र आंदोलन किया जाएगा। एनएसयूआई ने निष्पक्ष जांच और पीड़िता को न्याय दिलाने की मांग की है। संगठन ने स्पष्ट किया कि वह आदिवासी समाज और महिलाओं की सुरक्षा के लिए हरसंभव संघर्ष करेगा और दोषियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा।

फ्री ट्रैफिक मूवमेंट के पहले दिन भड़की हिंसा

कुकी समुदाय के लोगों ने बसें रोकीं, सुरक्षाबलों ने लाठीचार्ज किया, आंसूगैस छोड़े

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में शनिवार को फिर से जिंदगी की गाड़ी पटरी पर लौटने की कोशिश शुरू हुई। सुरक्षा बलों की निगरानी में आम लोगों की बसें अलग-अलग जिलों में चलने लगीं। लेकिन कुकी जनजाति के लोग अभी भी इसके खिलाफ हैं। वो चाहते हैं कि जब तक उन्हें अलग राज्य ना मिल जाए, तब तक आवाजाही पूरी तरह से ना खुले। राजधानी इंफाल से 45 किलोमीटर दूर कांगपोकपी जिले में सुरक्षा बलों ने सड़क पर लगे अवरोध हटाए। इस दौरान माइन-प्रूफ गाड़ियां सबसे आगे थीं। कुछ कुकी महिलाओं ने हाईवे जाम करने की कोशिश की। सुरक्षाबलों ने लाठीचार्ज कर दिया, जिसमें कई महिलाएं घायल हो गईं। बता दें कि मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह के इस्तीफे के बाद मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लागू हो गया है। केंद्र सरकार ने साफ कर दिया है कि आज से राज्य में कहीं भी सड़क जाम नहीं होने दिया जाएगा। मणिपुर के कई कुकी बहुल इलाकों में झड़पें हुईं। स्थानीय लोगों ने वीडियो शेयर किए हैं, जिनमें प्रदर्शनकारी गाड़ियों पर पत्थर फेंकते, सड़कें खोदते, टायर जलाते और बैरिकेड लगाते नजर आ रहे हैं। कुछ लोग सुरक्षाबलों को गालियां दे रहे थे और उन्हें वापस जाने के लिए कह रहे थे। मणिपुर में मैतेई और कुकी समुदायों के बीच मई 2023 से ही झड़पें हो रही हैं। मैतेई समुदाय घाटी में रहता है, जबकि कुकी जनजाति के लोग पहाड़ी इलाकों में रहते हैं। जमीन के अधिकार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व जैसे कई मुद्दों पर दोनों समुदायों के बीच टकराव चल रहा है। इस हिंसा में 250 से ज्यादा लोग मारे गए हैं और लगभग 50,000 लोग बेघर हो गए हैं। कुकी नेताओं, लगभग दो दर्जन उग्रवादी समूहों (जिन्होंने ऑपरेशन स्थगन समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं) और उनके नागरिक संगठनों ने केंद्र सरकार से मांग की है कि मणिपुर में लोगों की आवाजाही पूरी तरह से खोलने से पहले उन्हें एक अलग प्रशासन दिया जाए।

कर्नाटक में इजराइली टूरिस्ट होम स्टे ओनर के साथ गैंगरेप

- आरोपियों ने 3 दोस्तों को नहर में फेंका, एक का शव बरामद

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के प्रसिद्ध टूरिस्ट प्लेस हम्पी में 27 साल की एक इजराइली महिला टूरिस्ट और एक होम-स्टे ओनर के साथ तीन लोगों ने गैंगरेप किया। घटना 6 मार्च की रात करीब 10.30 बजे तुंगभद्रा नहर के किनारे की है। पीड़ित महिलाएं नहर के किनारे बैठी हुई थीं। महिलाओं के साथ 3 अन्य टूरिस्ट भी थे। इनमें से एक डेनियल अमेरिका से था, जबकि दो अन्य पंकज महाराष्ट्र से और बिबास ओडिशा से थे। आरोपियों ने गैंगरेप से पहले इन तीनों को नहर में धक्का दे दिया था। डेनियल और पंकज तैरकर बाहर आ गए, जबकि बिबास की डूबने से मौत हो गई। पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। एक की तलाश जारी है। बिबाश की लाश दो दिन बाद मिली पुलिस ने ओडिशा के बिबास को ढूढ़ने के लिए 7 मार्च की सुबह रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। इसमें फायरब्रिगेड के अलावा पुलिस और खोजी कुत्तों को लगाया गया। हालांकि इसमें सफलता नहीं मिली।

जमानत के बावजूद 24 हजार से ज्यादा कैदी जेल में

बेल की राशि नहीं भर पाने के कारण बंद हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडिया जस्टिस रिपोर्ट और नालसा सुप्रीम कोर्ट की रिपोर्ट सामने आई है। इसके मुताबिक देश की जिलों में 24 हजार से ज्यादा ऐसे कैदी मौजूद हैं, जो जमानत मिलने के बाद भी जेल में बंद हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, कैदियों के जेल में होने का कारण यह है कि वे जमानत की शर्तें पूरी नहीं कर पा रहे हैं। यानी ये कैदी जमानत राशि जमा नहीं करा सके हैं। इसलिए वे जमानत के बाद भी जेल में हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि इन कैदियों में ऐसे कई लोग हैं जो मामूली अपराधों में जेल गए थे। देश की जेलों में बंद कुल कैदियों की संख्या 24,879 है।

राहुल नेता नहीं, यूट्यूबर बनकर धारावी आए थे

- शिवसेना नेता बोले-मुंबई कांग्रेस दिवालिया, लेकिन राहुल को परवाह नहीं

मुंबई (एजेंसी)। शिवसेना (शिंदे गुट) के नेता संजय निरुपम ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी के धारावी दौरे की आलोचना की। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी धारावी में कांग्रेस नेता के तौर पर नहीं, बल्कि यूट्यूबर बनकर

पहुंचे थे। दरअसल राहुल गांधी गुरुवार (6 मार्च) को धारावी में लेदर इंडस्ट्री के कारीगरों से मिलने पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने कारीगरों को होने वाली दिक्कतों को लेकर लोगों से बातचीत की थी। निरुपम बोले- राहुल ने धारावी में 'शूट' के लिए दौरा किया राहुल गांधी के दौरे को पॉलिटिकल स्टंट बताते हुए संजय निरुपम ने कहा कि राहुल धारावी में सिर्फ वीडियो बनाने और सोशल मीडिया पर पोस्ट करने के लिए दौरा किए थे। मुंबई कांग्रेस की हालत खराब है। पार्टी के पास न वोट बचे हैं, न पैसा।

केंद्रीय राज्यमंत्री बिट्टू समेत तीन नेताओं पर चार्जशीट

लुधियाना (एजेंसी)। केन्द्रीय राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू, पूर्व कैबिनेट मंत्री भारत भूषण आशु और पूर्व विधायक संजय तलवाड़ के खिलाफ लुधियाना पुलिस ने कोर्ट में चार्जशीट दाखिल की है। यह मामला 27 फरवरी 2024 को निगम के जोन-ए कार्यालय में हुए हंगामे से जुड़ा है। चार्जशीट आरोपियों की गैरमौजूदगी में दायर की गई है। इसके बाद न्यायिक मजिस्ट्रेट जुगराज सिंह ने सभी आरोपियों को 17 मार्च के लिए

पेशी का आदेश

नोटिस जारी कर कोर्ट में हाजिर होने का आदेश दिया है। इस केस में निगम जोन-ए कार्यालय के चौकीदार अमित कुमार की शिकायत पर दर्ज किया गया है। आईपीसी की धारा 186 (लोक सेवक के कार्य में बाधा) और 353 (लोक सेवक को कर्तव्य पालन से रोकने के लिए हमला या आपराधिक बल का इस्तेमाल) के तहत आरोप लगाए गए है। अभियोजन पक्ष के मुताबिक 27 फरवरी 2024 को सांसद रवनीत सिंह बिट्टू,कांग्रेस नेताओं और वर्करों के साथ जोन-ए दफ्तर में विरोध प्रदर्शन किया था। प्रोटेस्ट के दौरान कांग्रेस नेताओं की पुलिस के साथ झड़प हुई थी। नेताओं ने गेट पर ताला लगा दिया था।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर तेरापंथ समाज की महिलाओं ने लेखिका अदिति सिंह भदौरिया को किया सम्मानित

इंदौर। तेरापंथ समाज की महिलाओं द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में लेखिका और स्तंभकार अदिति सिंह भदौरिया का सम्मान किया गया। तेरापंथ समाज की महिला मंडल की अधयक्ष ममता समझोता, महिला मंडल की मंत्री मोना बमोरी, कोषाध्यक्ष संतोष लोनावत एवं अखिल भारतीय तेरापंथ राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या प्रभा होड़ावत ने उन्हें सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया।

वरिष्ठ पत्रकार राजेश पांडेय को देवलिया पत्रकारिता सम्मान आज

भोपाल। इस वर्ष का राज्य स्तरीय भुवनभूषण देवलिया पत्रकारिता सम्मान वरिष्ठ पत्रकार राजेश पांडेय को उनकी सुदीर्घ पत्रकारिता के लिए प्रदान किया जाएगा। अलंकरण समारोह एवं देवलिया स्मृति व्याख्यान रविवार 9 मार्च को सुबह 11 बजे से माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान में होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश के ग्रामीण विकास एवम ग्रामोद्योग मंत्री प्रह्लाद सिंह पटेल । व्याख्यान का विषय है- एक देश- एक कानूनः कितना जरूरी । मुख्य वक्ता होंगे जाने माने पत्रकार प्रो. हर्षवर्धन त्रिपाठी (नई दिल्ली)। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर करेंगे। विषय प्रवर्तन करेंगे वरिष्ठ पत्रकार शिवकुमार विवेक। मंच सूत्रधार होंगे वरिष्ठ पत्रकार, उद्बोधक एवं कला समीक्षक विनय उपाध्याय। भुवनभूषण देवलिया स्मृति व्याख्यानमाला समिति के सदस्य एवं साहित्यकार अशोक मनवानी ने बताया कि यह समिति का 14वां वार्षिक आयोजन है। समिति राज्य स्तरीय भुवनभूषण देवलिया पत्रकारिता सम्मान अलंकरण में सम्मान स्वरूप 11 हजार रूपए एवं प्रशस्तिपत्र दिया जाता है। इस बार भुवनभूषण देवलिया राज्य स्तरीय पत्रकारिता सम्मान- 2025 वरिष्ठ पत्रकार पांडेय को दिया जाएगा। कई अखबारों में संपादक रहे राजेश पांडेय सम्प्रति राजकाज, शख्सियत, जबलपुर डायरी जैसे स्तम्भों के लिये और संपादकीय टिप्पणियों और सटीक विश्लेषण करने वाली चुनावी रिपोर्टिंग के लिए जाने जाते हैं।

शालीमार टाउनशिप लाइब्रेरी में महिला दिवस पर हुआ आयोजन

इंदौर। शालीमार टाउनशिप लाइब्रेरी में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम में इतनी बड़ी संख्या में उपस्थिति और परिसंवाद में सीमा भिसे, शैला आचार्य, डॉ. आसावरी सप्रे, अपर्णा पारनेरकर, अलका मिश्रा, स्वाति गोडबोले के तथ्यपूर्ण, प्रभावशाली और ऊर्जा से भरपूर भाषण ने कार्यक्रम को यादगार बना दिया। वसुंधराजी के बेहतरीन संचालन और विजय रांगणेकर द्वारा संचालित क्विज में श्रोताओं के उत्साहपूर्ण प्रदर्शन लंबे समय तक याद रहेगा। डॉ. शोभा चौधरी और श्रीमती नलिनी वेंगुरलेकर के संक्षिप्त किंतु प्रेरक उद्बोधन में महिलाओं से जुड़े अनेक विषयों पर अपने विचार रखे।

नाराजगी | गुजरात में अपने ही नेताओं पर बुरी तरह भड़के राहुल गांधी, खूब सुनाया

30-40 लोगों को निकाल दो, आधे तो बीजेपी के साथ मिले

अहमदाबाद (एजेंसी)। कांग्रेस नेता और सांसद राहुल गांधी दो दिन के गुजरात दौरे पर हैं। गुजरात दौरे के दौरान उनका गुस्सा सातवें आसमान पर दिखा है। उन्होंने अपनी ही पार्टी को निशाने पर लिया है। राहुल ने यहां तक कह दिया है कि 30 से 40 लोगों को निकालना पड़ेगा तो निकाल दो। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि मैं गुजरात के युवाओं, किसानों, छोटे व्यापारियों और अपनी बहनों के लिए आया हूं। मैंने खुद से पूछा कि मेरी और कांग्रेस पार्टी की क्या जिम्मेदारी है।

तकरीबन पिछले 30 सालों से हम यहां सरकार में नहीं हैं। जब तक हम अपनी जिम्मेदारी को पूरा नहीं करेंगे, तब तक गुजरात की जनता हमें चुनाव में विजयी नहीं बनाएगी। जिस दिन हमने अपनी जिम्मेदारी पूरी कर दी, उसी दिन गुजरात के सभी लोग कांग्रेस पार्टी को अपना समर्थन दे देंगे। राहुल गांधी यहीं नहीं रुके, उन्होंने बोला कि इस समय

कांग्रेस दो गुटों में बंट चुकी है। एक गुट पार्टी के साथ खड़ा है, उसमें कांग्रेस की विचारधारा है, लेकिन जो दूसरा गुट है वो जनता से दूर है, वहां भी आधे लोग तो बीजेपी से मिले हुए हैं। जब तक इन लोगों को अलग नहीं कर देते, गुजरात की जनता हम पर विश्वास नहीं करने वाली है। राहुल गांधी यह भी मानते हैं कि गुजरात की कांग्रेस इस समय रेस का घोड़ा नहीं है बल्कि वो बारात का घोड़ा बनकर रह गई है, इसी वजह जनता उनका भरोसा नहीं कर पा रही। वैसे राहुल गांधी का ऐसा इसलिए बोलना पड़ा है क्योंकि पिछले कई विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को करारी शिकस्त का सामना करना पड़ा है। पिछले चुनाव की बात करें तो बीजेपी ने 156 सीटें जीतकर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया था, वही कांग्रेस ने सबसे खराब करते हुए मात्र 17 सीटें जीती थीं। इसके ऊपर कई नेताओं का पार्टी छोड़ देना भी कांग्रेस को राज्य में कमजोर कर गया है। ऐसे में अब राहुल गांधी पूरी कोशिश कर रहे हैं कि गुजरात कांग्रेस को फिर एकजुट किया जाए। वैसे अगर गुजरात में राहुल गरजे हैं तो पीएम मोदी ने भी नवसारी ने महिला शक्ति को सम्मानित किया है।

भोपाल में नेशनल लोक अदालत

61 खंडपीठों का गठन, सुलझाए गए लंबित और प्री-लिटिगेशन केस

भोपाल (नप्र)। भोपाल जिला न्यायालय और तहसील न्यायालय में 8 मार्च को इस साल की पहली नेशनल लोक अदालत हुई। इसका शुभारंभ सुबह 10:15 बजे हुआ, जिसमें कई मामलों का निपटारा किया गया। विद्युत विभाग और नगर निगम द्वारा हल किए

गए मामलों में छूट दी गई, जिससे लोगों को राहत मिली।

फिलहाल भोपाल जिले के न्यायालयों में 1.56 लाख से ज्यादा मामले लंबित हैं। इस लोक अदालत में 17,241 मामले रखे गए, जिनमें - आपराधिक और सिविल विवाद, चेक बाउंस के मामले (धारा 138), क्लेम और बिजली से जुड़े केस, वैवाहिक विवाद शामिल थे। इसके अलावा, बिजली बिल, बैंक ऋण वसूली, जलकर, बीएसएनएल और ट्रैफिक चालान से जुड़े 60,989 प्री-लिटिगेशन मामले भी अदालत में रखे गए।

मामलों के निपटारे के लिए 61 खंडपीठ बनीं

तेजी से फैसले लेने के लिए जिला न्यायालय, तहसील न्यायालय, कुटुंब न्यायालय, श्रम न्यायालय और रेरा सहित 61 खंडपीठ बनाई गई।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, भोपाल के सचिव सुनीत अग्रवाल ने बताया कि राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जबलपुर के निर्देश पर इस लोक अदालत का आयोजन हुआ। 61 अलग-अलग बैच बनाकर ज्यादा से ज्यादा मामलों का हल निकालने की कोशिश की गई।

अब तक - 17,000 पेंडिंग केस निपटारे के लिए भेजे गए, 75,000 प्री-लिटिगेशन मामले सुलझाने की प्रक्रिया जारी है ।

सीहोर के नट-बोल्ट कारखाने में भीषण आग

कई किमी दूर से दिख रही थीं लपटें

सीहोर (नप्र)। भोपाल-इंदौर हाइवे पर स्थित सीहोर के ग्राम खोखरी में दीपक फास्टनर अंब्रेको कंपनी में शनिवार दोपहर भीषण आग लग गई। दोपहर करीब 1:15 बजे कारखाने में अचानक आग लग गई थी। आग इतनी भयानक थी कि इसकी लपटें और काला धुआं कई किलोमीटर दूर ग्राम भाऊखेड़ी तक दिखाई दे रहा था। आग लगते ही कारखाने में अफरा-तफरी मच गई। कर्मचारी अपनी जान बचाने के लिए बाहर की तरफ भागे। घटना की सूचना मिलते ही सीहोर से तीन दमकल वाहन मौके पर भेजे गए थे। इसके अलावा कोठरी, आष्ठा और इछावर से भी दमकल वाहनों को रवाना किया गया था।

पशुओं की वैकल्पिक पशु चिकित्सा पद्धति पर कार्यशाला 11-12 मार्च को

भोपाल (नप्र)। पशुओं की वैकल्पिक पशु चिकित्सा पद्धति पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन होटल पलाश रेसीडेंसी में 11 एवं 12 मार्च को पूर्वाह्न 10 बजे से होगा। प्रदेश के पशुपालन एवं डेयरी विभाग एवं मध्य प्रदेश राज्य पशु चिकित्सा परिषद के समन्वय से आयोजित इस कार्यशाला में दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट के विषय विशेषज्ञ श्री अभय महाजन, प्रमुख सचिव, पशुपालन एवं डेयरी श्री उमाकांत उमराव, अध्यक्ष, वेटरनरी काउंसिल ऑफ इंडिया श्री उमेश चंद्र शर्मा शामिल होंगे।

कार्यशाला में राष्ट्रीय स्तर के विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रदेश के पशु चिकित्सकों को तकनीकी मार्गदर्शन दिया जाएगा। इसमें लगभग 110 प्रतिभागी सम्मिलित हो रहे हैं। कार्यशाला में वैकल्पिक पद्धति से पशुओं की चिकित्सा किए जाने संबंधी एक पॉलिसी बनाने का भी कार्य किया जाना है। इससे शासन द्वारा वैकल्पिक पशु चिकित्सा पद्धति को पशुओं की चिकित्सा के लिए प्रदेश में लागू किया जा सके ।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर भोपाल में मीडिया जगत की महिला प्रतिनिधियों से संवाद किया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर श्रीमती माधुरी मोयदे को 'राष्ट्रमाता पद्मावती पुरस्कार' प्रदान किया।

सूक्ष्म सिंचाई परियोजनाओं से अब किसान वर्ष में तीन बार फसलें पैदा करेंगे : उप मुख्यमंत्री देवड़ा

उप मुख्यमंत्री ने ग्राम रठाना और भावता में 26 करोड़ 63 लाख की 6 सड़कों का किया भूमि-पूजन

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने शनिवार को मंदसौर जिले के ग्राम रठाना और भावता में 26 करोड़ 63 लाख 76 हजार की लागत से निर्मित होने वाली 6 सड़कों का भूमि पूजन किया। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में सूक्ष्म सिंचाई परियोजनाओं से अब किसान एक वर्ष में 3 बार फसल पैदा कर सकेंगे। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि, 2047 में देश विश्व की सबसे बड़ी ताकत होगी। 2047 में आजादी के 100 वर्ष पूर्ण होंगे। इसके लिए सरकार ने आगामी 25 साल का रोड मैप तैयार किया है। उन्होंने कहा कि देश की जनता की ताकत को आधार बनाकर देश को विश्व गुरु के स्थान पर लाने का संकल्प सरकार ने लिया है। आर्थिक रूप से देश संपन्न होगा विश्व की तीसरी सबसे बड़ी शक्ति होगी।

उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने मंदसौर में औद्योगिक निवेश हो इस पर लगातार कोशिश की जा रही है। कोई भी परिवार बिना मकान के नहीं रहेगा। उन्होंने कहा कि सरकार युवा, गरीब, किसान, महिलाओं के उत्थान के लिये काम कर रही हैं। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि हर जिले में मेडिकल कॉलेज बनाए जा रहे हैं। जिससे आसानी से गरीब व्यक्ति को स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सके। आयुष्मान कार्ड ने गरीबों को नई जिंदगी

प्रदान की है। उनके जीवन को बचाया है।

श्री देवड़ा शनिवार को ग्राम रठाना में 11 करोड़ 26 लाख 21 हजार रुपए से निर्मित होने वाले सड़कों का भूमि-पूजन किया। भूमि पूजन के अंतर्गत 1 करोड़ 26 लाख रुपए की लागत से निर्मित होने वाली पिपलिया कराडिया गांव से शासकीय हाई स्कूल तक सड़क मार्ग, 7 करोड़ 91 लाख 77 हजार रुपए की लागत से निर्मित होने वाली लच्छाखेड़ी से रठाना होते हुए नेतावली तक सड़क मार्ग, 2 करोड़ 8 लाख 39 हजार रुपए की लागत से निर्मित होने वाली खंडेरिया मारू से नावन खेड़ी तक सड़क मार्ग शामिल है।

ग्राम भावता में 15 करोड़ 37 लाख से निर्मित होने वाले सड़कों का किया भूमिपूजन

उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने ग्राम भावता में 15 करोड़ 37 लाख 55 हजार रुपए से निर्मित होने वाले सड़कों का भूमिपूजन किया। भूमि पूजन के अंतर्गत 4 करोड़ 42 लाख 64 हजार रुपए की लागत से निर्मित होने वाली कुचड़ोद से झावल तक सड़क मार्ग, 4 करोड़ 31 लाख 95 हजार रुपए की लागत से निर्मित होने वाली भावता से कांकरवा बालाजी सड़क मार्ग, 6 करोड़ 62 लाख 96 हजार की लागत से निर्मित होने वाली लसुड़ावन से भाटरेवास सड़क शामिल है।

महिला आरपीएफ जवान अब मिर्च स्प्रे से होंगी लैस

यात्रियों की सुरक्षा के लिए रेलवे का नया फैसला, आत्मरक्षा की देंगे ट्रेनिंग

भोपाल (नप्र)। महिला यात्रियों की सुरक्षा को और प्रभावी बनाने के लिए भारतीय रेलवे ने एक अहम कदम उठाया है। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) की महिला कर्मियों को अब मिर्च स्प्रे कैन से लैस किया जाएगा, जिससे वे आपातकालीन परिस्थितियों में अधिक सशक्त और प्रभावी ढंग से कार्रवाई कर सकेंगी।

महिला सुरक्षा और आत्मनिर्भरता पर जोर- यह निर्णय विशेष रूप से महिला यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और महिला आरपीएफ कर्मियों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से लिया गया है। भारतीय रेलवे ने यह कदम उन स्थितियों को ध्यान में रखते हुए उठाया है, जहां महिला यात्री असुरक्षित महसूस कर सकती हैं। सुनसान रेलवे स्टेशन, चलती ट्रेनें और दूरस्थ स्थानों पर तैनात महिला आरपीएफ कर्मियों को मिर्च स्प्रे से लैस करना उन्हें संभावित खतरों से निपटने में मदद करेगा।

रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के महानिदेशक मनोज यादव ने इस पहल को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा, यह निर्णय महिला सशक्तिकरण और सार्वजनिक स्थलों को अधिक सुरक्षित बनाने के हमारे मिशन के अनुरूप है। महिला आरपीएफ कर्मियों को मिर्च स्प्रे देकर हम न केवल उनकी सुरक्षा बढ़ा रहे हैं, बल्कि उनकी कार्यक्षमता और आत्मविश्वास को भी मजबूत कर रहे हैं।

'मेरी सहेली' टीम का अहम योगदान

भारतीय रेलवे महिला सुरक्षा को लेकर विशेष रूप से सतर्क है। वर्तमान में आरपीएफ में 9 प्रतिशत महिलाएं कार्यरत हैं, जो कि किसी भी केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (आरपीएफ) में महिलाओं का सबसे अधिक अनुपात है। इनमें से कई महिला आरपीएफ कर्मी 'मेरी सहेली' टीम का हिस्सा हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य ट्रेनों में सफर करने वाली महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

देशभर में 250 से अधिक 'मेरी सहेली' टीमें प्रतिदिन लगभग 12,900 महिला यात्रियों से संपर्क स्थापित कर उनकी सहायता करती हैं। संकट की स्थिति में महिला आरपीएफ कर्मी तुरंत सहायता के लिए आगे आती हैं, जिससे यात्रियों को अधिक सुरक्षित यात्रा अनुभव मिलता है।

महिला सुरक्षा पर रेलवे की विशेष योजना

भोपाल रेल मंडल के कमांडेंट प्रशांत यादव ने बताया कि हाल ही में कुछ जोनों में महिला आरपीएफ कर्मियों पर हमले की घटनाएं सामने आई हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए मिर्च स्प्रे उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने कहा, हमारी महिला कर्मी न केवल अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करेंगी, बल्कि अन्य महिला यात्रियों में भी जागरूकता बढ़ाने का कार्य करेंगी।

इस पहल से न केवल महिला आरपीएफ कर्मियों की कार्यक्षमता बढ़ेगी, बल्कि महिला यात्रियों को भी अधिक सुरक्षित और भरोसेमंद माहौल मिलेगा।

भोपाल रेल मंडल में 45 महिला आरपीएफ कर्मी तैनात

भोपाल रेल मंडल में कुल 500 से अधिक आरपीएफ जवान हैं, जिनमें करीब 45 महिला जवान कार्यरत हैं। इन महिला कर्मियों को न केवल मिर्च स्प्रे कैन से लैस किया जाएगा, बल्कि उन्हें आत्मरक्षा और संकट प्रबंधन की विशेष ट्रेनिंग भी दी जाएगी, जिससे वे किसी भी अप्रत्याशित स्थिति में प्रभावी ढंग से कार्रवाई कर सकें।

रोशनपुरा चौराहे पर बनेगा कांग्रेस का स्टेट हेडक्वार्टर

कॉमर्शियल कॉम्पलेक्स तोड़कर बनेगा 5 मंजिला ऑफिस, पूरे प्रदेश में प्रॉपर्टी की कराई मैपिंग

भोपाल (नप्र)। बीजेपी के बाद अब कांग्रेस भी अपना नया हाईटेक ऑफिस बनाने की तैयारी कर रही है। भोपाल के रोशनपुरा चौराहे पर स्थित कॉमर्शियल कॉम्पलेक्स को तोड़कर नया प्रदेश कांग्रेस कमेटी (पीसीसी) ऑफिस बनाने के प्लान पर काम शुरू हो गया है।

बताया जा रहा है कि रोशनपुरा चौराहे पर बने कॉम्प्लेक्स की पहली मंजिल पर जिला कांग्रेस कमेटी का कार्यालय है। ग्राउंड फ्लोर पर करीब 35 दुकानों में तमाम शो रुम संचालित हो रहे हैं। पीछे पार्किंग और सामने ओपन ग्राउंड हैं। इसी कॉम्प्लेक्स को तोड़कर कांग्रेस का 5 मंजिला नया प्रदेश मुख्यालय बनाने की तैयारी है।

मौजूदा कार्यालय में विभाग रहेंगे संचालित- भोपाल में अभी जिस भवन में प्रदेश कांग्रेस कार्यालय संचालित हो रहा है, वहां नया ऑफिस बनने के बाद प्रकोष्ठ और सामाजिक संगठनों के कार्यालय और जिला कार्यालय को शिफ्ट किया जा सकता है।

रोशनपुरा चौराहे पर है दो एकड़ जमीन- कांग्रेस सूत्रों के अनुसार रोशनपुरा चौराहे पर पार्टी की करीब दो एकड़ जमीन है। भोपाल की सबसे प्राइम लोकेशन पर कांग्रेस की जमीन और कॉमर्शियल कॉम्प्लेक्स है। हालांकि, कई किराएदार ऐसे हैं जो सालों से किराया ही नहीं दे रहे हैं। ऐसे में पार्टी ने अब अपनी जमीन पर मुख्यालय बनाने की कवायद शुरू कर दी है। नए ऑफिस में किसी भी प्रकार की व्यवसायिक गतिविधि संचालित नहीं होगी। यानि अब कांग्रेस अपने ऑफिस परिसर में किसी दुकान या शोरुम को किराए पर स्पेस नहीं देगी।

आम, इमली, जामुन, बबूल के पेड़ों की कटाई पर रोक

हाईकोर्ट के फैसले के बाद वन विभाग ने 62 प्रजातियों को लेकर जारी किए निर्देश

भोपाल(नप्र)। मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के फैसले के बाद वन विभाग ने आम, इमली, जामुन, बबूल सहित 62 तरह के पेड़ों की कटाई पर रोक लगा दी है। वन विभाग की संरक्षण शाखा ने दो दिन पहले इसके आदेश जारी कर दिए हैं। अब न तो सरपंच खेत एवं खलिहान में खड़े पेड़ों को काटने की अनुमति दे सकेंगे और न ही बगैर ट्रांजिट परमिट (टीपी) लकड़ी का परिवहन किया जा सकेगा। हाईकोर्ट ने 5 साल की लंबी कानूनी प्रक्रिया के बाद 1 मार्च को यह फैसला सुनाया है।

आम आदमी से समन्वय स्थापित करने के लिए वन विभाग ने साल 2015 और 2017 में 62 प्रजातियों पर टीपी की अनिवार्यता समाप्त कर दी थी। इसके बाद से मध्य प्रदेश में पेड़ों की अंधाधुंध कटाई चल रही थी। सड़क किनारे खेतों में खड़े आम, बबूल, शू-बबूल, इमली, जामुन, अमरूद सहित अन्य प्रजातियों के पेड़ों को धड़ल्ले काटा जा रहा था। साल 2024 में अवैध रूप से पेड़ काटने के 10 हजार 688 प्रकरण दर्ज हुए हैं। साल 2023 में 50 हजार 180 प्रकरण दर्ज हुए थे। यह स्थिति तब है। जब हाईकोर्ट साल 2019 में 62 प्रजातियों को टीपी मुक्त करने की अधिसूचना पर स्थगन दे चुका है। जिस पर अब फैसला आया है।

स्थगन के दौरान नहीं दिया ध्यान- 62 प्रजातियों को टीपी मुक्त करने की अधिसूचना पर 5 साल पहले स्थगन आया था, पर वन विभाग के अधिकारियों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। तभी तो अभी तक सड़क किनारे या दूरदराज के इलाकों में निजी भूमि पर खड़े पेड़ों को काटा जा रहा था। अकेले भोपाल की बात करें तो आरा-मशीनों पर रोज 50 गाड़ियां लकड़ी आती हैं। प्रदेश के अन्य शहरों में भी ऐसे ही हालात हैं।

10 हजार के जुर्माने पर छोड़ रहे- इस मामले में हालत यह है कि, पहले तो मैदानी वन अधिकारी और कर्मचारी लकड़ी परिवहन करने वालों को पकड़ ही नहीं रहे और जिन्हें पकड़ते हैं। उनका 10 हजार रुपए का चालान बनाकर छोड़ देते हैं। जबकि ऐसे मामलों में वाहन में मौजूद लकड़ी के बाजार मूल्य की दो गुनी राशि लेने का प्रावधान है।

केंद्रीय मंत्री शिवराज बोले

अगले चुनाव में 33 प्रतिशत आरक्षण महिलाओं को

स्मार्ट पार्क में पौधरोपण के बाद महिलाओं से संवाद में कहा-बहनें गरीब, मजबूर क्यों रहें

भोपाल (नप्र)। आगामी 2028-29 में होने वाले चुनाव 33 प्रतिशत महिला आरक्षण के साथ होंगे। पीएम नरेंद्र मोदी महिलाओं के लिए लोकसभा में 33 प्रतिशत आरक्षण लेकर आए हैं। अगले लोकसभा व विधानसभा चुनाव में 33 प्रतिशत सीटों पर बहनें मिलेंगी। इन चुनावों में आरक्षण के साथ महिलाएं सांसद, विधायक और मंत्री बनेंगी। महिलाएं भारत को समृद्ध बनाएंगी। महिलाओं का राजनीतिक, आर्थिक,सामाजिक सशक्तिकरण हो रहा है। देश में अभी डेढ़ करोड़ लखपति दीदी हैं। पीएम मोदी के नेतृत्व में जल्दी ही तीन करोड़ लखपति दीदी होंगी।

केंद्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने ये बातें शनिवार को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर राजधानी के स्मार्ट पार्क में महिलाओं के साथ पौधरोपण के बाद मीडिया से कही। शिवराज सिंह ने बहनों से संवाद कर उनके अनुभव सुने। इस दौरान चौहान ने कहा कि बहनें गरीब क्यों रहें, उनकी आंखों में आंसू क्यों हों, वो मजबूर क्यों रहें, वह भी आर्थिक रूप से सक्षम बनें और उनके चेहरे पर भी मुस्कुराहट रहे। इसमें भारत सरकार के ग्रामीण विकास विभाग के अंतर्गत आजीविका मिशन एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहा है। पौधारोपण के बाद केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के साथ महिलाओं ने सेल्फी भी ली।

शिवराज ने कहा कि आजीविका मिशन से आज 91 लाख महिला स्वयं-सहायता समूह पूरे देश में हैं जिससे लगभग 11 करोड़ बहनें जुड़ी हुई हैं। हमारे ये समूह 745 जिलों के 7 हजार 138 ब्लॉक्स में फैले हुए हैं। हमारे क्लस्टर लेवल के भी ऑर्गेनाइजेशन बने हैं, जो इन समूहों को संगठित करने का काम करते हैं। इन समूहों को, संस्थाओं को 50 हजार करोड़ रुपए की राशि प्रदान की गई है। बैंकों से भी सस्ती ब्याज दरों पर 10 लाख 14 हजार करोड़ रुपए दिलाए गए हैं। कोई दीदी बैंक सखी हैं, कोई कृषि सखी है, कोई टैक्स सखी है, कोई पशु सखी है, ये अलग-अलग कार्यों में लगी हुई हैं।

विकसित भारत बनाने में बहनों का योगदान होगा- केन्द्रीय मंत्री शिवराज ने कहा कि, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसे अभियानों से बहन-बेटियों का शैक्षणिक सशक्तिकरण भी हो रहा है। मैं इसके लिए प्रधानमंत्री मोदी को धन्यवाद देता हूं। अब अगले लोकसभा, विधानसभा चुनाव में 33 प्रतिशत सीटों पर यह बहनें ही चुनाव लड़ेंगी। ये सांसद, विधायक, मंत्री बनेंगी। बहनों, बेटियों की तकदीर भी बदलेगी और अपनी जिंदगी भी बदलेंगी और अपने देश को विकसित भारत के रूप में विकसित भारत बनाने में इनका बहुत महत्वपूर्ण योगदान होगा।

समीक्षा

प्रमोद ताम्बट
समीक्षक

हास्य एवं व्यंग्य बोध से सराबोर 'दाढ़ी से बड़ी मूँछ'

जहाँ प्रेम जनमेजय कहते हैं कि ''उनकी रचनाओं में व्यंग्य लद कर नहीं आया है, सहज आया है'', वहीं डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी कहते हैं ''सहज होकर व्यंग्य लिखा जाए तो वह कितना अच्छा बन जाता है''। प्रियदर्शी खैरा का यह संकलन इन दोनों ही टिप्पणियों पर खरा उतरता है। श्री खैरा की व्यंग्य रचनाओं में व्यंग्य भी उसी सहजता से आता है जितनी सहजता से हास्य। यह एक मणिकांचन संयोग की तरह होता है जो रचना की पठनीयता को निसंदेह द्विगुणित कर देता है।

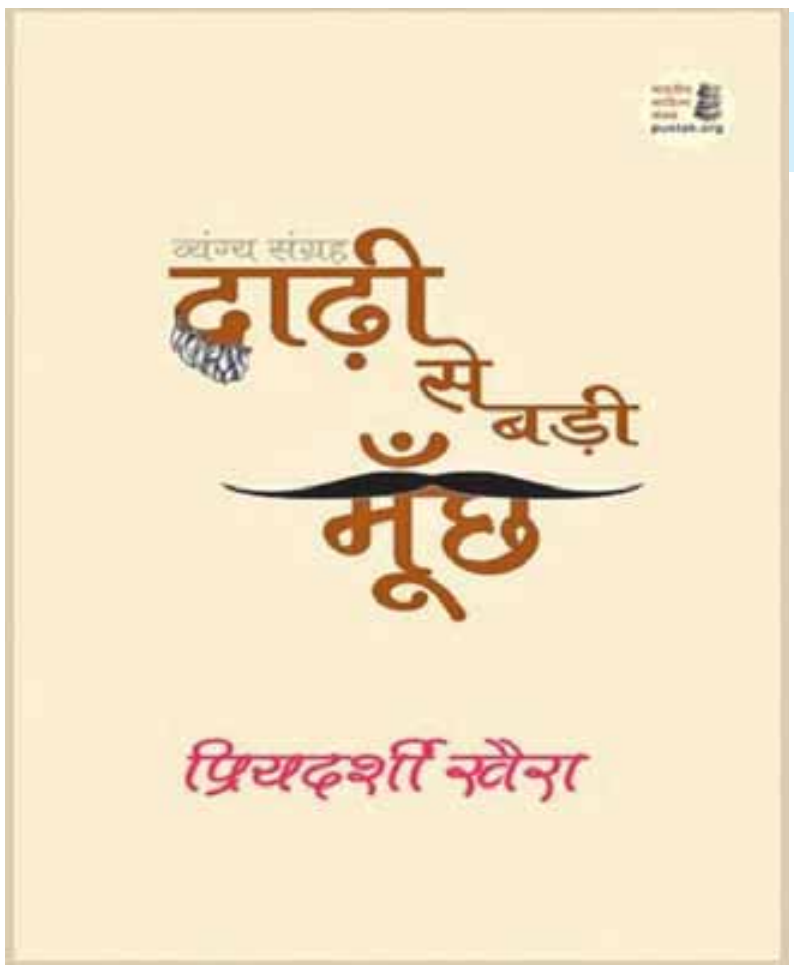

हाल ही में प्रियदर्शी खैरा का नया व्यंग्य संकलन 'दाढ़ी से बड़ी मूँछ' भारतीय साहित्य संग्रह कानपुर से प्रकाशित हुआ है। दो-दो स्वनामधन्य व्यंग्यकारों प्रेम जनमेजय एवं पद्मश्री डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी की पृथक-पृथक भूमिकाओं से सजे इस व्यंग्य संकलन ने एक तरीके से व्यंग्य लेखन की दुनिया में एक अलग लकीर खींच कर रख दी है यह कहने में कोई गुरेज़ नहीं किया जाना चाहिए। जहाँ प्रेम जनमेजय कहते हैं कि ''उनकी रचनाओं में व्यंग्य लद कर नहीं आया है, सहज आया है'', वहीं डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी कहते हैं ''सहज होकर व्यंग्य लिखा जाए तो वह कितना अच्छा बन जाता है''। प्रियदर्शी खैरा का यह संकलन इन दोनों ही टिप्पणियों पर खरा उतरता है।

श्री खैरा की व्यंग्य रचनाओं में व्यंग्य भी उसी सहजता से आता है जितनी सहजता से हास्य। यह एक मणिकांचन संयोग की तरह होता है जो रचना की पठनीयता को निसंदेह द्विगुणित कर देता है। इसे साध लेना वास्तव में बहुत कठिन होता है यदि वह घुट्टी के साथ मिली हुई न पी रखी गई हो। अर्थात हास्य-व्यंग्य यदि आपके रग-रग में न हो तो जीवंत रचनाकर्म बहुत ही मुश्किल काम है।

श्री खैरा का बुंदेलखंड से लम्बा नाता रहा है इसलिए वहाँ का नैसर्गिक हास्य-व्यंग्य बोध उनकी रचनाओं में सहज प्रवाह की तरह चला आता है जिससे वे अपने रचनाकर्म को समृद्ध बनाते चलते हैं।

पूरे संकलन की हरेक रचना में खैरा जी अपनी विशिष्ट खिलंदड़ी भाषा के माध्यम से अपने हास्य-व्यंग्य बोध का छिड़काव सा करते हुए चलते हैं। जिससे पहली ही रचना से संकलन के प्रति उत्सुकता का भाव पैदा होता है जो निश्चित ही पाठक को पूरा संकलन पढ़ा ले जाने के लिए मजबूर कर देता है।

श्री खैरा लम्बे समय तक शासकीय विभाग में उच्चतम पद पर रहे हैं और उन्होंने इस दौरान व्यवस्था के छोटे से लेकर उच्चस्तर तक की इकाइयों को बहुत ही करीब से देखा है। किसी भी लेखक के पक्ष में यह महत्वपूर्ण बात होती है कि वह अपने जीवनानुभव को किस तरह से अपने रचना कर्म में लेकर आता है, श्री खैरा का रचनाकर्म इस मामले में काफी ईमानदार और प्रामाणिक प्रतीत होता है।

व्यंग्य संकलन में कुछ 37 रचनाएँ हैं। सारी ही रचनाएँ खैरा जी के मृदुल हास्य एवं व्यंग्य बोध से सराबोर हैं जो आपको मज़े-मज़े में गंभीर विसंगतियों का अहसास भी कराती चलती हैं। खैरा जी की रचनाएँ व्यंग्य के मानदंडों पर भी खरी उतरती हैं, वे बहुत सहजता से व्यंजना, वक्रोक्ति, विट, कटाक्ष, ह्यूमर, आयरनी, सरकाज़्म, कामदी आदि व्यंग्य के हथियारों का उपयोग करते नज़र आते हैं।

व्यंग्य संकलन 'दाढ़ी से बड़ी मूँछ' का कवर पेज अत्यंत साधारण है, इसे संकलन के स्तर के हिसाब से और ज़्यादा कलात्मक एवं मानीखेज बनाया जाता तो बेहतर होता।

व्यंग्य संकलन- 'दाढ़ी से बड़ी मूँछ'
लेखक- प्रियदर्शी खैरा
प्रकाशक- भारतीय साहित्य संग्रह, कानपुर
मूल्य- रु 400/-

कविता

इन दिनों जिंदगी

लाल बहादुर श्रीवास्तव

इन दिनों मौत हथेली पर
और ज़िंदगी रामभरोसे
कब क्या हो जाए ये तो
बस राम ही जाने ...
हम नादान सपनों के
ऊंचे ऊंचे महल बनाने बैठे
कब मिट्टी में मिल जाए
पलक झपकाते क्या जाने ?

इन दिनों जिंदगी
मौत के पास है? गिरवे
सूद तो क्या मूल से
पहले ही अलविदा कह दें।

जो समझ लें गूढ़ रहस्य?
समय से इस जिंदगी का
क्या पता मौत जिंदगी को
कहीं न कहीं बख्श दें।

==========

नीतीश मिश्र

मैं अपने खेत को
पाठशाला बनाता हूँ
और पढ़ते पढ़ते
एक दिन थक जाता हूँ
तब अपने खेत को
अपना कब्रिस्तान बनाता हूँ।
और मुर्दा बनकर
मिट्टी की आवाज सुनता हूँ
मिट्टी की आवाज सुनते सुनते
एक दिन खुद मिट्टी बन जाता हूं
मेरे खेत में फसलें कम
पुरखों की पिरामिड ज्यादा हैं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लघुकथा

नई दुनिया

रामेश्वरम तिवारी

विनय और विजया के बीच वैश्विक कंपनी में काम करते हुए विपरीत अभिरुचियाँ होने के बावजूद मैत्री हो गई। दोनों ने हठपूर्वक अपने माता-पिता को राज़ी किया और अँधों की तरह शादी के पवित्र रिश्ते में बंध गए, पर पहली ही रात दोनों के बीच एक-दूसरे की पॉकेट पर डाका डालने को लेकर इतनी ज़ोर की अनबन हुई कि तलाक़ की नौबत आ गई।

अगली सुबह होते ही विजया ने अपना बोरिया-बिस्तर बाँधा और हमेशा के लिए विनय की ज़िंदगी से नौ दो ग्यारह हो गई। उनके माता-पिता द्वारा अपनी ओर से शादी के भारतीय परम्परा की, शादी के महत्व की लाख दुहाई दी गई, परञ्च दोनों की आँखों पर पाश्चात्य संस्कृति का ऐसा चश्मा चढ़ा कि भरसक समझाइश के बावजूद रिश्ते के धागे की कच्ची डोर टूट गई।

लाचार माता-पिता को मन मारकर अपने नालायक औलादों की ख़ातिर उनके प्रथम प्रणय बंधन की मुक्ति के लिए न्यायालय की शरण जाना पड़ा और अंततः साल दो साल की प्रतीक्षा के बाद दोनों को फिर से अपनी इच्छानुसार आज़ादी के साथ जीने का लाइसेंस मिल गया। पर इधर पड़ोसी के मुँह से सुनने में आया है कि विनय और विजया अपने विगत को दुर्घटना मानकर सपनों की नई दुनिया बसाने की तैयारी में लगे हुए हैं।

लघुकथा

कवच

सुरेश सौरभ

'एक बात पूछना चाहती हूँ। आप गुस्सा तो न होंगे।'-हौले से पत्नी बोली।

'पूछो।'-पति शान्त लहजे में बोला।

'आप इतने बड़े नेता कैसे बने।'

'किसी से कहोगी तो नहीं बड़ा राज है।'

'नहीं।'

'बरसों पहले वो होली का दिन था। मैं अपने युवा साथियों के साथ हुड़दंग करते हुए सड़क पर होली खेल रहा था। तभी एक बाइक चालक दो महिलाओं को अपने पीछे बिठाए निकल रहा था। उन पर रंग गुलाल मैंने फेंका। फब्तियाँ कसते हुए, धार्मिक नारे उछालते हुए, उनकी बाइक जबरदस्ती दोस्तों ने रोक ली। महिलाएं हिजाब में थीं, हमने उन्हें भी न छोड़ा। अगले दिन, हम सोशल मीडिया पर वायरल थे। पुलिस ने हमें गिरफ्तार किया। वीडियो में हमारे धार्मिक नारे हमारे सुरक्षा कवच बने। तमाम धार्मिक नेता हमारे पक्ष में आ गए। हम जेल गए, पर मात्र औपचारिकता के लिये। बाहर आए तो माला पहनाकर लोगों ने नेता बना दिया। हा हा हा.. 'बड़े लकी हैं आप। जब ऊपर वाला मेहरबान तो..... हा हा हा... !'

जयंती पर विशेष

हर्षवर्धन पाण्डे
लेखक पत्रकार हैं।

जाकिर हुसैन- संगीत का प्रेरणादायक सफर

जाकिर हुसैन का संगीत का सफर बहुत ही प्रेरणादायक रहा। उन्होंने अपनी शुरुआत भारतीय शास्त्रीय संगीत से की लेकिन समय के साथ-साथ उन्होंने वर्ल्ड म्यूजिक, जाज और अन्य संगीत शैलियों को भी अपनाया। वह संगीत के विविध रूपों को समझते हुए विभिन्न शैलियों में माहिर हो गए। जाकिर हुसैन ने न केवल भारतीय संगीत में उत्कृष्टता प्राप्त की, बल्कि उन्होंने पश्चिमी संगीतकारों के साथ भी काम किया। उनका संगीत भारतीय और पश्चिमी संगीत का एक अनोखा संगम प्रस्तुत करता है। उनका नाम ऐसे संगीतकारों के साथ लिया जाता है जिन्होंने भारतीय संगीत को पश्चिमी दर्शकों के बीच लोकप्रिय बनाया।

जाकिर हुसैन भारतीय शास्त्रीय संगीत के एक महान तबला वादक और संगीतकार थे। उन्होंने अपनी शानदार तबला वादन शैली से पूरे विश्व में अपनी पहचान बनाई। जाकिर हुसैन का नाम भारतीय संगीत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। वह भारतीय संगीत को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने वाले एक अग्रणी कलाकार थे जिन्होंने अपनी कला से संगीत की नई ऊँचाइयों को छुआ।

जाकिर हुसैन का जन्म 9 मार्च 1951 को मुंबई में हुआ था। वह प्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद अली अकबर खान के घराने से ताल्लुक रखते थे। उनके पिता, उस्ताद अल्लाह रक्खा खान, भी एक प्रसिद्ध तबला वादक थे, जो पं.रविशंकर के साथ कई संगीत समारोहों में भाग ले चुके थे। जाकिर हुसैन ने बचपन से ही अपने पिता से संगीत की शिक्षा ली। उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण के कारण वे बहुत जल्दी एक शानदार तबला वादक बन गए।

जाकिर हुसैन का संगीत का सफर बहुत ही प्रेरणादायक रहा। उन्होंने अपनी शुरुआत भारतीय शास्त्रीय संगीत से की लेकिन समय के साथ-साथ उन्होंने वर्ल्ड म्यूजिक, जाज और अन्य संगीत शैलियों को भी अपनाया। वह संगीत के विविध रूपों को समझते हुए विभिन्न शैलियों में माहिर हो गए। जाकिर हुसैन ने न केवल भारतीय संगीत में उत्कृष्टता प्राप्त की, बल्कि उन्होंने पश्चिमी संगीतकारों के साथ भी काम किया। उनका संगीत भारतीय और पश्चिमी संगीत का एक अनोखा संगम प्रस्तुत करता है। उनका नाम ऐसे संगीतकारों के साथ लिया जाता है जिन्होंने भारतीय संगीत को पश्चिमी दर्शकों के बीच लोकप्रिय बनाया।

जाकिर हुसैन की वादन शैली अद्वितीय और प्रभावशाली थी। उनके तबला वादन में एक विशेष तरह की ताजगी और नवीनता दिखती थी। वह शास्त्रीय तकनीकों के साथ-साथ संगीत में सुधार करने की कला में भी माहिर रहे। जाकिर हुसैन लय, गति और ताल की जटिलताओं को साधारण रूप में प्रस्तुत करने में सक्षम थे। उनके तबला वादन की शैली इतनी सहज और सजीव होती थी कि वह श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती थी।

लगभग छह दशकों के करियर में हुसैन ने पंडित रविशंकर और उस्ताद विलायत खान जैसे महान भारतीय कलाकारों के साथ काम किया। उन्होंने जॉन मैकलॉघलिन के साथ शक्ति और ग्रेटफुल डेड के मिकी हार्ट के साथ प्लैनेट ड्रम जैसे प्रतिष्ठित फ्यूजन बैंड बनाकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी नई जमीन बनाई जिसने भारतीय शास्त्रीय संगीत की पहुंच का विस्तार किया जिससे यह दुनिया भर के दर्शकों के लिए सुलभ हो गया। उन्होंने मलयालम फिल्म वनप्रस्थम (1999) के लिए संगीत सलाहकार के रूप में अपने काम के लिए प्रशंसा प्राप्त की जिसका कान फिल्म महोत्सव में प्रीमियर हुआ था। फिल्म को ए.एफ.आई.लॉस एंजिल्स

अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में ग्रैंड जूरी पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था और 2000 में इस्तांबुल अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव, मुंबई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव और राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में प्रतिष्ठित पुरस्कार जीते थे।

एक कलाकार के रूप में हुसैन कई फिल्मों में अपने झंडे गाड़ते दिखाई दिए जैसे कि वृत्तचित्र ज़ाकिर एंड हिज फ्रेंड्स (1998) और द स्पीकिंग हैंडः ज़ाकिर हुसैन एंड द आर्ट ऑफ़ द इंडियन ड्रम (2003) जिसका निर्देशन सुमंत्र घोषाल ने किया था। हुसैन ने 1983 की मर्चेंट आइवरी फिल्म हीट एंड डस्ट में इंदर लाल के रूप में अपनी अभिनय प्रतिभा का भी प्रदर्शन किया जहाँ उन्होंने एक सहयोगी संगीत निर्देशक के रूप में काम किया। 2018 में फिल्म निर्माता और लेखक नसरीन मुन्नी कबीर ने 'जाकिर हुसैनः ए लाइफ इन म्यूजिक' पुस्तक में हुसैन के जीवन और करियर के बारे में लिखा। यह कार्य 2016 और 2017 में आयोजित 15 साक्षात्कार सत्रों पर आधारित था। हुसैन ने इस्माइल मर्चेंट की इन कस्टडी और द मिस्टिक मैसर जैसी फिल्मों के साउंडट्रैक में भी अपना बेमिसाल योगदान दिया। उनके तबला प्रदर्शन को फ्रांसिस फोर्ड कोपोला की एपोकैलिप्स नाउ और बर्नार्डो बर्टोलुची की लिटिल बुद्ध में भी जोड़ा गया था। हुसैन तबला बीट साइंस के संस्थापक सदस्य भी थे जो अमेरिकी संगीतकार बिल लासवेल के नेतृत्व में एक विश्व संगीत सुपरग्रुप था। इस ग्रुप नेसमकालीन इलेक्ट्रॉनिक और वैश्विक संगीत शैलियों के साथ पारंपरिक भारतीय लय को मिश्रित किया। 2016 में हुसैन ने व्हाइट हाउस में अंतर्राष्ट्रीय जैज़ डे ऑल-स्टार ग्लोबल कॉन्सर्ट में प्रदर्शन किया जिसकी मेजबानी तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने की थी।

जाकिर हुसैन ने संगीत की कई शैलियों में योगदान दिया और भारतीय संगीत को पश्चिमी दुनिया में फैलाने के लिए कई पुरस्कारों से नवाजा गया। उन्हें 1987 में भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' और 2002 में 'पद्मभूषण' जैसे सम्मान प्राप्त हुए। जहाँ संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (1990) प्रदर्शन कला में उत्कृष्टता के लिए इस राष्ट्रीय मान्यता के सबसे कम उम्र के प्राप्तकर्ताओं में से एक रहा वहीं 7 बार के ग्रैमी विजेता, जिसमें 1992 में प्लैनेट ड्रम के लिए उनकी ऐतिहासिक पहली जीत और 2024 में ऐज वी स्पीक, दिस मोमेंट और पश्तो के लिए तीन जीत शामिल रही। हिलेरी क्लिंटन द्वारा प्रस्तुत पारंपरिक कलाओं के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका का सर्वोच्च पुरस्कार राष्ट्रीय विरासत अध्येतावृत्ति (1999) भी प्राप्त किया। कालिदास सम्मान (2006) कला में असाधारण योगदान के लिए मिला वहीं क्योटो पुरस्कार (2022) संगीत में वैश्विक उपलब्धि के लिए जापान का प्रतिष्ठित पुरस्कार से भी उन्हें नवाजा गया। उन्हें 2022 में मुंबई विश्वविद्यालय से डॉक्टर ऑफ लॉ की मानद उपाधि और 2017 में सैन फ्रांसिस्को जैज़ सेंटर से लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड मिला। इसके अलावा, उन्हें कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले।

वे महान तबला वादक साथ ही एक संगीतकार और कुशल एक्टर भी रहे। उन्होंने 'द परफेक्ट मर्डर', 'मिस बीटीज चिल्ड्रन, 'साज' और 'मंटो' जैसी फिल्मों में अपने अभिनय की विशेष छाप छोड़ी। बतौर अभिनेता पहली बार 1983 की फिल्म 'हीट एंड डस्ट' में नजर आए। 1998 की फिल्म 'साज' में जाकिर हुसैन ने शबाना आजमी के साथ अहम रोल निभाया था, जो अपने कॉन्टेंट की वजह से काफी विवादों में रही थी। शबाना आजमी के प्रेमी के रोल में उनके अभिनय को काफी सराहा गया था। हुसैन ने तबला की भूमिका को बदल दिया और इसे एक सहायक वाद्ययंत्र से शास्त्रीय प्रदर्शन के केंद्र में बढ़ा दिया। उनकी जटिल लय और अभिव्यंजक वादन शैली ने भारत और विदेशों दोनों में व्यापक प्रशंसा प्राप्त की। जाकिर हुसैन ने अपनी पत्नी एंटोनिया मिनेकोला से शादी की, जो एक कथक नर्तकी और शिक्षिका थीं, जिन्होंने अपने कॅरियर का प्रबंधन भी किया था।

जाकिर हुसैन का नाम भारतीय संगीत के क्षेत्र में हमेशा सम्मान से लिया जाएगा। उन्होंने अपने अद्वितीय वादन शैली और संगीत के प्रति अपने समर्पण से भारतीय शास्त्रीय संगीत को पूरी दुनिया में प्रसिद्ध किया। उनका संगीत न केवल शास्त्रीय संगीत के प्रति प्रेम को बढ़ावा देता है, बल्कि वह एक नई दिशा और सोच को भी प्रस्तुत करता है। उनकी कला आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

कविता

सुनो न पापा...

सुदर्शन व्यास

सुनो न पापा,
मैं जानता हूँ कि
मेरे आने के बाद
आपकी जिन्दगी में अचानक-से
कई तरह के बदलाव हुए हैं,
इसलिए आज आपसे अपने
मन की बात कहना चाहता हूँ।
अपनी जिंदगी बगैर किसी चिंता के वैसे ही जियें
जैसे मेरे आने से पहले आप जिया करते थे,
क्योंकि मैं ये अच्छी तरह से जानता हूँ कि
आप मेरे और मम्मा की खुशियों के बारे में
जैसा सोच रहे हैं,
उससे कई गुना बेहतर कर दिखाएंगे।
जानते हैं जब पहली बार
आपने मुझे हाथों में लिया था तो
आपकी आँखों की पोर गिली थी
और होंठ फड़फड़ा रहे थे।
मेरे नवजात और कोमल शरीर को देखकर
आपको डर लगा होगा कि
हाथों से खिसक न जाऊँ
लेकिन सच कहूँ तो आपके हाथों में मैंने
खुदको सबसे ज्यादा सुरक्षित पाया था।
आपकी छुअन का वो पहला अहसास
मुझे आभास करा गया कि
मेरे पापा के सामने दुनिया के
सारे सुपर हीरो कुछ भी नहीं।
जब पहली बार आपने मुझे
अपनी बाँहों की गोद बनाकर
थपकी देते हुए सुलाया था न पापा,
मुझे ऐसे लगा जैसे आपकी दोनों
बाँहें ही मेरा अपना घर है।
वादा करो कि जब मैं कद- काठी में
आपके बराबर हो जाऊँ तो
मुझे अपने इस घर से दूर नहीं करोगे,
क्योंकि दुनिया में रहकर भी
जब दुनिया से अकेला पाउंगा तो
मुझे अपने इसी घर में ही सुकून मिलेगा।
क्या आप जानते हैं कि
मैं पहली बार आपको देखकर
क्यों मुस्कुराया था?
क्योंकि मैं ये पहले से जानता था कि
मेरे लिए मम्मा के बाद
आप सबसे ज्यादा स्पेशल हैं और
वादा करता हूँ कि जिन्दगीभर स्पेशल रहेंगे।
पापा, जब मैं पहला कदम धरती पर रखकर
आगे बढ़ने की कोशिश करुंगा न,
तो आपकी उंगलियों का सहारा होगा और
जब जिन्दगी में अपने सपनों को संजोने के लिए
कदम बढ़ाउंगा तो
आपकी सीख और हौसला चाहिए होगा।
मैं ये दिन कभी नहीं भूलुंगा
जब मेरे एक रुदन से
आप और मम्मा सारी रात नहीं सो पाते हैं।
मैं इन रातों को वापस तो नहीं ला पाउंगा लेकिन
बड़े होने के बाद आपकी हर एक रात
नींद और सुकूनभरी होगी,
ये वादा है आपसे।
तो मेरे प्यारे पापा..
आप मुझे देखकर कोई चिंता न किया करो...
क्योंकि आप मुझे बड़ा होने में
मदद नहीं कर रहे हैं
बल्कि मेरे साथ आप भी
अब बड़े हो रहे हैं।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

पिंक आयरन- भावों, विचारों एवं रंगों का सधा हुआ संगम

आजाद रेखाओं का फलक पर विचरण की कहानी है, बिंदुओं के सहगामी आचरण को दर्शाने का प्रयास भी है। पिंक आयरन का ये तीसरा संस्करण है तो वहीं माटी का दूसरा, जो विमला आर्ट फोरम के वार्षिक प्रदर्शन का एक माध्यम है। विमला आर्ट फोरम जहां कृतियों के सृजन को कलाकार तैयार होते हैं, नये और सीखने वाले बच्चे धीरे-धीरे गम्भीर स्ट्रोक्स, हुनर के जानकार बनते हैं, जहां समय-समय पर तमाम ऐसे और भी कार्यक्रम किए जाते हैं जो उनके मनोबल और इच्छाशक्ति को बलवती बनाती है। वरिष्ठ एवं नये कलाकारों के बीच का संगम स्थल भी बना हुआ है विमला आर्ट फोरम, जो गुड़गांव में है और जिसके द्वारा आयोजित ये प्रदर्शनी ऑल इंडिया फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट सोसायटी में आयोजित हुई है। कलाकार दिलीप शर्मा जो विमला आर्ट फोरम के प्रेसिडेंट, कन्वेनर भी हैं तथा आर्ट फोरम के फाउंडर, ट्रस्टी कंचन मेहरा दोनों के अथक प्रयासों से आज ये संस्था कला के नये-नये प्रतिमान गढ़ रही है। बहुत ही कम समय में विमला आर्ट फोरम ने लाजवाब प्रदर्शन किया है। फिलहाल इस प्रदर्शनी को क्युरेट किया है चित्रकार एवं समीक्षक जय प्रकाश त्रिपाठी जी ने।

लगातार कई वर्षों से कला की दुनिया में कुछ विशेष करने की चाह लिए विमला आर्ट फोरम निरंतर सृजनात्मक कार्य में लगा हुआ है जिसका मूल मंत्र माटी से जुड़ाव है, जहां लोक कला है, आदिवासी कला है तो समय के साथ भागती दुनिया की कला के रूप में आधुनिकता का जामा ओढ़े आधुनिक विषयों, तकनीकों से ओत-प्रोत अमूर्तन भी है, जहां पिंक आयरन के माध्यम से ऐसे कृतियों को प्रदर्शित किया गया है कि देखते बने, जिसमें संघर्ष है, प्रवाह है, उन्माद है तो रंगों का स्वतंत्र, स्वछंद संयोजन भी है। आजाद रेखाओं का फलक पर विचरण की कहानी है, बिंदुओं के सहगामी आचरण को दर्शाने का प्रयास भी है। पिंक आयरन का ये तीसरा संस्करण है तो वहीं माटी का दूसरा, जो विमला आर्ट फोरम के वार्षिक प्रदर्शन का एक माध्यम है। विमला आर्ट फोरम जहां कृतियों के सृजन को कलाकार तैयार होते हैं, नये और सीखने वाले बच्चे धीरे-धीरे गम्भीर स्ट्रोक्स, हुनर के जानकार बनते हैं, जहां समय-समय पर तमाम ऐसे और भी कार्यक्रम किए जाते हैं जो उनके मनोबल और इच्छाशक्ति को बलवती बनाती है। वरिष्ठ एवं नये कलाकारों के बीच का संगम स्थल भी बना हुआ है विमला आर्ट फोरम, जो गुड़गांव में है और जिसके द्वारा आयोजित ये प्रदर्शनी ऑल इंडिया फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट सोसायटी में आयोजित हुई है। कलाकार दिलीप शर्मा जो विमला आर्ट फोरम के प्रेसिडेंट, कन्वेनर भी हैं तथा आर्ट फोरम के फाउंडर, ट्रस्टी कंचन मेहरा दोनों के अथक प्रयासों से आज ये संस्था कला के नये-नये प्रतिमान गढ़ रही है। बहुत ही कम समय में विमला आर्ट फोरम ने लाजवाब प्रदर्शन किया है। फिलहाल इस प्रदर्शनी को क्युरेट किया है चित्रकार एवं समीक्षक जय प्रकाश त्रिपाठी जी ने।

आइफेक्स के विशाल हॉल में प्रवेश करते ही बांए तरफ वाले दीर्घा में आपकी मुलाकात माटी II से तथा दांए दीर्घा में पिंक आयरन III से होगी। जहां रंगों-रेखाओं का सामूहिक प्रदर्शन है। पिछले आलेख में चर्चा हुई थी माटी की आइए अब बढ़ते हैं पिंक आयरन की ओर। हॉल में प्रवेश करते ही दाहिने हाथ वाले दीर्घा में प्रदर्शित है पिंक आयरन की कलाकृतियां।

पिंक आयरन दीर्घा में प्रदर्शित अभिलाषा सिंह, अदिति, दिव्या पांडे, हिमाद्री गुप्ता, सोनम सिकरवार, कट गैब्रिल, नितिक्षा, आर. वि. सिंधु, रंजीता कुमार, कंचन मेहरा तथा सुशील तंवर के कृतियों में प्रकृति है, इच्छा है, तितलियों सी उड़ने की इच्छा शक्ति है तो भारत की प्राचीन भारतीय धरोहर प्राचीन गुफाएं भी हैं जिसमें सटीक और गहरे रंगों का प्रयोग हुआ है। अनुभूति कूट-कूट कर भरी गई है कृतियों में। कमल, बतख, पंजों के साथ रंगों का सुंदर सामन्जस्य हुआ है यहां, सुंदर संयोजन हुआ है। ज्यामिति आकृतियों का प्रयोग हुआ है तो वहीं समुद्र में खिलते कमल के साथ भावनाओं में उठने ज्वार को प्रदर्शित किया गया है तो कहीं अमरबेल के माध्यम से प्रकृति के लाजवाब रूप को संयोजित किया गया है, लाजवाब अंकन हुआ है, हरे रंगों के बीच से झांकते पीले रंग कृति को महक बना गई है। रंगीन धागों के माध्यम से हरे और पीले में भूरे रंग का गजब संयोजन हुआ है। दिव्या पांडे की कृति में रंगों का अच्छा संयोजन तो हुआ ही है विचारों का खुला प्रवाह भी है कुछ चित्र विदेशी धरातल से लिए हुए हैं तो जल प्रदूषण को भी बड़े गंभीरता से दर्शाया है अभिलाषा सिंह ने जबकि वहीं जर्नीज इंड में संबंधों के गूढ़ होते मामलों की गहनता से पड़ताल की गई है जबकि अनन्या हर उन्हीं रिश्तो को धरातल पर खूबसूरत रंगों के माध्यम से रिश्तो के खूबसूरत पक्ष को रखने का प्रयास करी हैं। कंचन मेहरा के कलाकृति में गहरे रंगों के गंभीर प्रयोग का अंदाजा लगाया जा सकता है।

कलाकार आलिया सेठी चारकोल और ग्रेफाइट पेंसिल के माध्यम से आंखों के अलग-अलग डाइमेंशन को देखने का प्रयास करती हैं। अंकिता कुमारी, अनीता शर्मा के कृतियों में चटख रंग किंतु गंभीर चिंतन है, भावनाओं की कद्र है, प्रकृति से संवाद है जबकि वहीं अर्पिता, खुशबू उपाध्याय सोनी, मोनालिसा सरकार, सोनम जैन के कृतियों में स्वप्न है, सपनों की हसीन दुनिया है, चटख रंग हैं, भावों का विशाल सागर है तो कहीं दूर निकल जाने की चाहत भी है। कहीं सपने में सुकून है तो कहीं फूल पत्तियों, पशु-पक्षियों से संवाद के बहाने शांति का एहसास है। खुशबू उपाध्याय सोनी के कृति में चारों तरफ के संशय को त्याग कर, संघर्षों को त्याग कर किसी विशेष दुनिया में, ज्यामितीय धरातल पर शांति और सुकून के साथ दिवा स्वप्न के सफर को दिखाया गया है। दीपा पटवारी के कृति में मांस है तो दुर्गा तायडे तमाम झंझावातों से निपटते हुए, जूझते हुए तमाम परिस्थितियों से लड़ते हुए स्वतंत्रता की इच्छा को दर्शाती हैं, हंसिका गोयल अपने कृति में साधारण रंगों और आकृतियों के साथ उपस्थित हैं तो जसप्रीत कौर के यहां भी आंखों में स्वतंत्रता की इच्छा दर्शित है।

मीनू रानी अपने शैली के साथ, फॉर्मेशन स्पाइन के माध्यम से रंगों से खेलते हुए स्वच्छंद प्रवृत्ति को दर्शाती हैं चारों तरफ खुले स्पेस के साथ आती हैं। काले रंगों के बीच बारीकियों से किया गया कार्य ध्यान खींचता है, बिल्कुल ही पतले ब्रश से बहुत ही बारीक वर्क हुआ है। अनुमेहा जैन, ज्योति चौधरी के यहां गहरे रंगों का विषाद है, छटपटाहट है। मोइत्री कुमार, राखी कुमार अपने कृतियों में रंगों के गहरे, हल्के, गंभीर विचारों के साथ हाजिर हुई हैं जबकि सस्वती चौधरी के कृति पंछियों की भांति झंझावातों से जूझते हैं, स्वतंत्र आकाश की दरकार है।

शर्मिला शर्मा, लोक शैली के साथ ग्रामीण परिवेश को लेकर उपस्थित हुई हैं, स्वप्न यहां भी है। शिखा सिंहा, सुभ्रा चंद के यहां ज्यामिति आकृतियों का बोलबाला, रंगों का सुंदर सा आयोजन है। निगार, पिकासो से प्रभावित नजर आते हैं तो पुनीत शर्मा के यहां रंगो का गहरापन है। अंकिता लिथोग्राफी के साथ उपस्थित हुई तो ट्विंकल नंदा सेरेमिक के साथ। फाइबर कृति म्यूजिशियन में लाजवाब स्ट्रोक्स है जो अनुराधा गुप्ता की कृति है। 365 दिन को परिभाषित करने का आराधना कुमारी का अपना अलग नजरिया है जबकि आराधना चौधरी के यहां लोक चित्रों की भरमार हैं। बनानी करवरकर, मेघा सिंह अपने विशेष विचारों के साथ उपस्थित हुई हैं, भारती वर्मा, दीपेंद्र कौर संघर्ष को परिभाषित करती हैं। दीपक सिसोदिया के कृति में परिवार का सुंदर एहसास है ज्योत्सना के कृति में सॉफ्ट रंगों के माध्यम ऑरेंज को दर्शाया गया है। वाटर कलर का सुंदर प्रयोग मीतू कपूर, ऋतु जैन तथा नमिता निर्मल ने किया है। स्मिता वर्मा बिल्कुल ही नैसर्गिक प्रकृति को दर्शाती हैं। पूर्वी शुक्ला के कृतियों में ज्यामितीय आकृतियां तो है ही बारीक अध्ययन के साथ देखने पर लोक प्रभाव भी दर्शित है, रंग बिल्कुल प्राचीनता की तरफ ले जाते हैं। वर्षों का अध्ययन और गंभीरता से किया गया आंकलन हैं इनके कृतियों में।

कलाकार प्रियांशी गौर, श्रीहृदया, श्रीजोनी विश्वास, त्राप्ति पोरवाल, मुस्कान सिंह, अनीता जिंदल, मंजू ठाकुर, विधु प्रकाश अपने कृति में संघर्ष को दर्शाती हैं साथ ही धरातल को लेकर उनका प्रयोग अच्छा है। रिंपा कुंडू का प्रयोग भी अच्छा है। रिबिया बकुत्रा राज सिंहासन पर केले को दिखाती हैं। रूपल के कृति में भी संघर्ष है जबकि सायली ब्लाइंड लव के माध्यम से आकृतियों के साथ अच्छा प्रयोग करती हैं। विनीता भास्कर अपने प्रचलित शैली में कार्य करी हैं, लोक कलाकृति पिड़िया के साथ उपस्थित हुई हैं। पद्मश्री प्राप्त शान्ति देवी के कृतियों में जीवन का पूरा सार समाया हुआ है। जीवन के कड़े संघर्षों का परिणाम उनके कृतियों में साफ झलकता है। संध्या शुक्ला अपने कृति मंजुषा में पूरी कहानी भर देती हैं जिससे जुड़ने के लिए कहानियों के तह तक जाना होगा। रंगों का अच्छा प्रयोग हुआ है यहां।

शशि भारती, शिखा की कृतियां भी सुंदर है।

विमला आर्ट फोरम की तरफ से आयोजित वार्षिक प्रदर्शनी में प्रदर्शित सभी कृतियों को लेकर फाउंडर, ट्रस्टी कंचन मेहरा जी की बात, उनकी खुशी इसमें जग जाहिर है। टैलेंटेड आर्टिस्ट को लेकर, कलाकारों को लेकर उनके विचार उनके कृतियों की बाबत ही संजीदा है जबकि कलाकार दिलीप शर्मा (प्रेसिडेंट, कन्वीनर विमला आर्ट फोरम) जो एक माध्यम बने हैं, जो कृतियों को इतना बढ़िया प्लेटफार्म दिलाने में सफल हुए हैं तो साथ ही सभी आमंत्रित कलाकारों को एक साथ जोड़ने का, एक साथ लाने का भी कारण बने हैं। इतने कृतियों के संगम का सारा श्रेय उनको ही जाता है। संजीव मेहरा, चेयरपर्सन विमला आर्ट फोरम के विचार भी प्रदर्शनी को लेकर बड़े ही सुंदर है। प्रदर्शनी का उद्घाटन 28 फरवरी को डॉ. विनोद नारायण इंदुल्कर जी के हाथों संपन्न हुआ, कार्यक्रम की मुख्य अतिथि चंद्रिका जोशी जी रहीं, गेस्ट ऑफ ऑनर पद्मश्री शान्ति देवी जी रहीं। प्रकाशित की जा रही कलाकृति पूर्वी शुक्ला (मध्यप्रदेश) की है

इंसान होने से रोक सके... दम नहीं!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

डॉक्यूमेंट्री फिल्म अवॉर्ड जीतने पर किसी भी सरकार को अगर बुरा लग रहा है, इसका मतलब है कि फिल्म में कोई तो ऐसी बात है, जो पसंद नहीं आई है। तीन मार्च को बेस्ट डॉक्यूमेंट्री फिल्म का ऑस्कर अवॉर्ड 'नो अदर लैंड' को दिया गया। एक तरफ तो फिल्म की टीम बधाइयां बटोर रही थी, दूसरी तरफ इजराइल सरकार के मंत्री इस फिल्म और टीम के खिलाफ बयान दे रहे थे। बासेल अदरा और युवाल अब्राहम को अवॉर्ड के लिए स्टेज पर आते दुनिया ने देखा। तब यह जाना सरकारों की दुश्मनी भी इंसान होने से नहीं रोक सकती। बासेल (28) फलस्तीनी हैं, जो अपने इलाके की कहानी को रिकॉर्ड करने के लिए जान की परवाह किए बिना दौड़ लगा जाते हैं। युवाल इजराइली हैं और अपने इजराइली होने का इस्तेमाल बासेल और मासाफेर यात्ता के लोगों की मदद के लिए कर रहे हैं। ये युवा मासाफेर यात्ता के लोगों की तकलीफ और इजराइल के बढ़ते अत्याचार को दिखा रहे हैं।

कई बार सिर्फ वजूद बनाए रखना ही विरोध की बुलंद आवाज है और यह फिल्म मिसाल है। फिल्म की पूरी टीम और आसपास के लोगों की जिंदगी दावं पर लगी हो, फिल्म के दौरान गोली लगते और मौत होते देखना हर एक के बस की बात नहीं है खुद बासेल और युवाल पर हमले होते हैं और ऐसे वक्त फिल्म की क्वालिटी, उसके साउंड, कैमरा वर्क से कहीं खास है इस फिल्म का होना।

बर्लिन फिल्म फेस्टिवल (2023) ने साबित किया कि ऐसी फिल्में, जो इंसानी समाज की सच्चाई बयान करती हैं, उनके लिए इससे बेहतर दूसरी जगह नहीं है। बर्लिन में अवार्ड जीतने के बाद जब भारत में मामी और धर्मशाला फिल्म फेस्टिवल में इस फिल्म की स्क्रीनिंग तय हो गई तो भारत की सरकार के दबाव में हटा दी गई। फरवरी 2023 से मार्च 2025 तक अनेक अवॉर्ड्स जीत चुकी यह फिल्म इस दौर की बात नहीं है, जब हमास के हमले के बदले में फलस्तीन पर हमला इजराइल कर रहा है। यह फिल्म उस दौर की बात है, जब तय नीति से लोगों को बेघर किया जा रहा है, घर तोड़े जा रहे हैं, गांव के गांव गुफाओं में हैं। अवॉर्ड लेने के बाद युवाल कह रहे हैं कि इजराइल और फलस्तीन में तब ही शांति आ सकती है, जब यहां हमले बंद हो जाएं, क्योंकि एक के बिना दूसरे न तो सुकून से और न महफूज रह सकते हैं।

फिल्म बिना लाग-लपेट उनकी कहानी कहती है, जिनकी जिंदगी को डेढ़ घंटे में देखकर नींद और चैन खो देते हैं। अंदर आवाज आती रहती है, कितना गलत हो रहा है! आने वाले वक्त में इस दौर की सच्चाई का बयान यह फिल्म है। इसलिए बासेल और युवाल की दोस्ती, उनके सपने और सलामती के लिए दुआ में हाथ ऊपर उठ जाते हैं। उनकी दुनिया इसी उम्मीद पर कायम है कि इसका कोई न कोई हल जरूर निकलेगा!

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।

उद्देश्य पर टिक नहीं पाई, अच्छे मुद्दे पर बनी वेब सीरीज

नशा करने और नशीले पदार्थों की तस्करी और नशे की हानियों पर बनी बीसियों फिल्मों और वेब सीरीज का एक लम्बा इतिहास रहा है और उसी इतिहास में अब शामिल हो गई है फरहान अख्तर और रितेश सिधवानी की कम्पनी एक्सेल एण्टरटेनमेंट द्वारा नेटफ्लिक्स के लिए बनाई गई पहली फिक्शन सिरीज़- 'डिब्बा कार्टेल'। इस सीरीज का नाम सुनकर पहले तो यही लगता है कि ये सीरीज मुम्बई के डिब्बा वालों की जिंदगी में घुस आए नशे के कारोबार पर बनी होगी, लेकिन गनीमत है कि दुनिया भर में अपनी कर्तव्यनिष्ठा के लिए प्रसिद्ध रहे मुम्बई के डिब्बा वालों को इससे दूर ही रखा गया है। वेब सीरीज बनाने वालों ने ये पूरी मेहनत जिस लिए भी उसको लेकर यही कहा जा सकता है इसका सामाजिक परिवेश बहुत गड़बड़ है।

सास-बहू मिलकर नशीले पदार्थों का कारोबार कर सकती हैं, यह आप 'सास, बहू और फ्लेमिंगो' में पहले ही देख चुके हैं। हाँ, शबाना आजमी और शालिनी पाण्डे की सास-बहू की जोड़ी ने इस सीरीज में अच्छा काम किया है। बेटे की भूमिका भूपेंद्र जड़ावत ने निभाई हैं। भगवान ऐसा बेटा ,ऐसा पति सबको दे जिसको यही नहीं समझ आता है कि उसकी जर्मनी यात्रा के लिए मोटी रकम जुटा रही उसकी बीवी कर क्या रही है? सिरीज की कहानी अपनी-अपनी ज़िन्दगी में किसी न किसी मजबूरी से जूझ रहीं पाँच महत्वाकांक्षी महिलाओं राजी (शालिनी पाण्डे), माला (निमिषा सजायन), शाहिदा (अंजलि आनन्द), वरुणा (ज्योतिका) और शीला (शबाना आजमी) के साथ जुड़ने और टिफिन सर्विस के आड़ में ड्रग कार्टेल खड़ा करने और उससे जुड़ी चुनौतियों की है।ये सारी महिलाएं एक फार्मा कम्पनी के कर्मचारियों के लिए बनी सोसायटी से किसी ना किसी तरह जुड़ी हैं। मसलन, वरुणा कंपनी के बड़े अधिकारी शंकर (जिशू सेनगुप्ता) की पत्नी है, जो कभी उसकी को-पार्टनर भी हुआ करती थी। राजी का पति हरी (भूपेंद्र सिंह जड़ावत) उसी कंपनी में जॉब करता है, जिसका इकलौता सपना जर्मनी जाना है। इसके लिए वह अपने बॉस शंकर को खुश करने में जुटा रहता है।

इस एक औसत सी सिरीज में इसे देर तक देखते रहने का दम मिलता है तो इसके आधार बने हैं विलक्षण अभिनेता गजराज राव। गजराज राव पंजाब से लेकर दिल्ली के भगीरथ पैलेस तक जिस अंदाज़ से दवाओं के इस मामले की तफ्तीश करते चलते हैं, वह उन सबको देखना चाहिए जो अभिनय के शुरुआती सबक सीख रहे हैं। गजराज राव का यह अभिनित चरित्र यह भी बताता है कि किसी कलाकार को एक चरित्र में खो जाने के लिए न सिर्फ सही देहभाषा अख्तियार करनी जरूरी है,

बल्कि कहानी के साथी चरित्रों से उसके कथोपकथन की भी बड़ी अहमियत होती है। काश, ऐसी ही मेहनत इस सीरीज के लिए जिशू सेनगुप्ता और ज्योतिका ने भी की होती। ड्रग्स, अण्डरवर्ल्ड, पुलिस, प्रशासन और फैमिली के घालमेल की कहानियों में 'मिर्जापुर' के बाद एक नई लकीर खींचने का एक्सेल के पास ये बड़ा मौका था, लेकिन अपने एलान के पाँच साल बाद ओटीटी तक पहुँची, महानगरों और छोटे शहरों के बीच की बस्ती ठाणे में बसी ये कहानी कथ्य के साथ न्याय करने में विफल रही।

पहले यह सिरीज शोनाली बोस बनाने जा रही थीं, उनके घर पर महीनों तक इसकी कास्टिंग भी चलती रही। सिरीज का यूएसपी बस इतना सा है कि अपने-अपने काम में परेशान चल रही कोई आधा दर्जन महिलाएं एपीसोड दर एपीसोड एक ऐसे कारोबार में कुछ अपनी मजबूरी और कुछ अपने 'एडवेंचर' के चलते जुड़ती चली जाती हैं, जिसकी गंभीरता का उनको पहली बार अंदाजा तब होता है जब इनकी 'मैनेजर' के बॉयफ्रेंड की गर्दन रेत दी जाती है। एक नेता का रंगरूट इनसे किलो के भाव नशा बिकवा रहा है और ये सब डब्बा डिलीवरी का स्टार्ट अप खोलकर 'मस्त' हैं। उधर, दवाओं पर नकेल कसने वाले संगठन का एक बुजुर्ग अफसर इलाके की एक फीमेल दारोगा के साथ मिलकर उस मामले की तफ्तीश में लगा है जिसमें प्रतिबंधित दवा खाकर लोग मर रहे हैं ।मामला एक कम्पनी से जुड़ा है, जिसकी जड़ें दूर तक फैली हैं।

कथानक और उसके प्रस्तुतिकरण के स्तर पर यह एक कमजोर सिरीज़ है। इसकी बुनावट में दूसरी सीरीज व फिल्मों का इतना ज्यादा प्रभाव है कि मूल कथा और उसके निहितार्थ ही खो गये हैं। सीरीज का निर्देशन बहका बहका सा है। फिल्म में कुछ दृष्य लिखे तो ठीक -ठीक गये हैं मगर उसे फिल्माने में हितेश मेहता का कैमरावर्क इतना कमज़ोर है कि वह दृश्य के मर्म को नहीं पकड़ पाया है। वैसे भी इस सीरीज में जहाँ कहीं भी थोड़ा बहुत ठीक ठाक ड्रामा डेवलप होता दिखता है, वहीं इसका निर्देशन इसका आयोडीन हवा में उड़ा देता है। सिनेमैटोग्राफी, सम्पादन और संगीत भी औसत दर्जे का ही है।

शादी का झांसा देकर गलत काम करने वाला आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। शादी का झांसा देकर गलत काम करने वाले आरोपी को कोतवाली पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार 6 मार्च को फरियादिया ने थाना कोतवाली बैतूल में आकर रिपोर्ट किया कि शादी का झांसा देकर सागर पिता

रमेश कारोसिया द्वारा लगातार बुरा काम किया जा रहा था और शादी करने से मना किया गया। जान से मारने की धमकी दी गई। पुलिस ने रिपोर्ट पर धारा 69, 351(2) बीएनएस का आरोपी सागर कारोसिया पिता रमेश कारोसिया उम्र 28 साल निवासी शास्त्री वार्ड सदर बैतूल के विरूद्ध मामला पंजीबद्ध किया गया था। पुलिस टीम द्वारा आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय पेश किया गया है। उक्त संपूर्ण कार्यवाही में थाना प्रभारी थाना कोतवाली निरीक्षक रविकांत डेहरिया, उनि चित्रा कुमरे, प्रआर ललिता, लीमा की विशेष भूमिका रही है।

चोरी के मामले में फरार आरोपी फैजू पुलिस की गिरफत में

बैतूल। चोरी के मामले में फरार आरोपी को कोतवाली पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। उक्त आरोपी द्वारा अपने साथी के साथ मिलकर 3 जनवरी और 28 फरवरी को चोरी की घटना को अंजाम दिया था। पुलिस ने इस मामले में एक आरोपी आदिल उर्फ अद्दू पिता रमजान शाह 20 साल निवासी फांसी खदान बैतूल, विधि विरूध्द नाबालिक बालक को पहले ही गिरफ्तार कर माननीन न्यायालय पेश किया गया था। वहीं प्रकरण के फरार आरोपी फैजू उर्फ शाहिद शाह पिता ईसराईल शाह उम्र 19 साल निवासी फांसी खदान बैतूल को को भी गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय पेश किया गया। गिरफ्तार आरोपी के पास से नगदी 11 हजार रूपये जप्त किया गया है। इस कार्रवाही मेकं थाना प्रभारी रविकांत डेहरिया, उनि पंचम सिंह उईके, सउनि सुरेश कुमार चौधरी, आरक्षक नितिन चौहान, आरक्षक शिवकुमार की सराहनीय भूमिका रही। बता दे कि आरोपियों ने करुना देशमुख पति स्व. प्रकाश देशमुख उम्र 64 वर्ष निवासी शांतिनगर गौठाना के सूने मकान में घूसकर नगदी 6000 रूपये व सोने की अंगूठी एवं मोबाईल फोन चोरी कर ले गया है।

अज्ञात वाहन ने मारी टक्कर युवक की मौत

बैतूल। बैतूल के शास्त्री वार्ड में रहने वाले 36 वर्षीय राजकुमार उर्फ सोनू कुमरे की जिला अस्पताल में मौत हो गई। वह ट्रेनों में ककड़ी बेचने का काम करता था। शुक्रवार देर रात घायल अवस्था में उन्हें जिला अस्पताल लाया गया। इलाज के दौरान शनिवार को उनकी मौत हो गई। पीएम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। परिजनों के अनुसार, सोनू मरामझिरी स्टेशन पर खड़ी होने वाली ट्रेनों में ककड़ी बेचता था। शुक्रवार शाम को वह ककड़ी बेचकर घर लौट आया था। उसकी बाइक मरामझिरी पर रह गई थी। बाइक लेने जाते समय किसी अज्ञात वाहन ने उन्हें टक्कर मार दी। घायल अवस्था में मिलने पर दोस्तों ने उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया। सोनू की शादी हो चुकी थी और उनकी 15 साल की एक बेटी है। वह अपने भाई-बहन के साथ रहते थे। पुलिस ने मर्ग कायम कर हादसे की जांच शुरू कर दी है।

बैंककर्मी को बाइक सवार ने मारी टक्कर, इलाज के दौरान मौत

बैतूल। भैंसदेही में सडक़ हादसे में रिटायर्ड बैंक कर्मी की मौत हो गई। गुदगांव मार्ग स्थित मदरसे के पास पेट्रोल पंप के करीब इवनिंग वॉक पर निकले 70 वर्षीय महादेव नागों इंचुलकर को एक बाइक ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि महादेव के दोनों पैर की हड्डियां टूटकर बाहर आ गईं। स्थानीय समाजसेवी शोएब और आरिफ ने घायल को एंबुलेंस से सीएचसी भैंसदेही पहुंचाया। हालत गंभीर होने पर उन्हें जिला अस्पताल रेफर किया गया। तडक़े इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया। हादसे में बाइक चालक विजय भी गंभीर रूप से घायल हुआ है। उसे भी जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसकी स्थिति गंभीर बनी हुई है। मृतक स्टेट बैंक भैंसदेही से पियून पद से सेवानिवृत्त हुए थे। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया है और मामले की जांच कर रही है।

न्यूरो संबंधी विकारों के इलाज के लिए हेल्थ ओपीडी का आयोजन आज

बैतूल। न्यूरो संबंधी विकारों से पीड़ित मरीजों के लिए विशेष हेल्थ ओपीडी का आयोजन किया जा रहा है। यह ओपीडी रविवार, 9 मार्च को सुबह 11 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक डॉ. अरुण श्रीवास्तव अस्पताल, होटल रामकृष्ण के पास, सदर बैतूल में आयोजित होगी। ओपीडी का संचालन नागपुर के प्रसिद्ध न्यूरोफिजिशियन डॉक्टर जीवन किनकर द्वारा किया जाएगा। डॉ. किनकर एमबीबीएस, एमडी, डीएम हैं और वर्तमान में एसएमएचआरसी नागपुर में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। इसके अलावा वे नेल्सन मल्टीस्पेशालिटी हॉस्पिटल नागपुर में सलाहकार न्यूरोलॉजिस्ट के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

दिन में खिल रही तेज धूप, सुबह-शाम ठंड, मौसम में बदलाव से बढ़े मरीज

उत्तर भारत से आ रही सर्द हवाओं से लुढ़का तापमान, मार्च में भी हल्की ठंड का एहसास

बैतूल। वर्तमान में महीना तो मार्च का है, लेकिन मौसम में सर्दी का एहसास अभी भी बरकरार है, क्योंकि ठंडी हवाओं ने शहर को चपेट में ले रखा है। जिससे मौसम सर्द बना हुआ है। मौसम विभाग के अनुसार अगले सप्ताह से तापमान बढऩे की संभावना है, तब तक लोगों को हल्की सर्दी का सामना करना पड़ेगा। हालात यह है कि दिन में जहां तेज धूप खिल रही है, वहीं शाम होते-होते ठंडी हवाएं और मौसम में ठंडक घुल रही है। इसके पीछे पश्चिमी विक्षोभ का असर माना जा रहा है। उत्तर भारत में हुई बर्फबारी के बाद ठंडी हवाएं चलने से मौसम में फिर से ठंड ने दस्तक दी है। इससे रात के समय मार्च में जनवरी जैसी ठंडक महसूस हो रही है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार उत्तरी क्षेत्रों में पिछले दिनों जमकर बर्फबारी हुई। पश्चिमी विक्षोभ के असर के बाद बर्फ पिघली और ठंडी हवाएं चलीं। ठंडी हवाएं जैसे ही मैदानी क्षेत्रों से होते हुए जिले में आई, ठंड का असर दिखने लगा है। मौसम विशेषज्ञों के मुताबिक मार्च में कभी-कभी ऐसा मौसम रहता है, क्योंकि उत्तरी हवाओं के आने के साथ ही विक्षोभ का असर भी पडता है, पर इस बार बैतूल के तापमान में ज्यादा ही गिरावट हुई है। हालांकि मौसम विभाग ने 9 मार्च के बाद न्यूनतम और अधिकतम तापमान बढऩे की उम्मीद जताई जा रही है।

शुक्रवार रात का तापमान 12.7 डिग्री दर्ज- शुक्रवार रात का न्यूनतम पारा 12.7 डिग्री दर्ज किया गया, जो कि दो दिन पहले 6 मार्च को 10.7 डिग्री था। वहीं शनिवार को सुबह और रात में ठंड का असर दिखा, लेकिन दोपहर के समय गर्मी महसूस हुई। शनिवार को अधिकतम तापमान 32.2 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार अब हवा की रफ्तार कम हो रही है। इससे धीरे-धीरे ठंड का असर भी कम होगा। वहीं मौसम के साफ होने से बारिश की कोई संभावना नजर नहीं आ रही है। इसके साथ ही जिले में कटाई का काम तेज हो गया है। गेहूं और चना की कटाई शुरू हो गई है।

सर्दी, बुखार के मरीज बढ़े - जिले में हर तीन से चार दिनों में मौसम बार-बार बदल रहा है। शहरी किसी भी परिस्थिति से अनुकूलता नहीं बैठा पा रहा है। इस कारण जिला अस्पताल में सर्दी, खांसी और बुखार की ओपीडी बढ़ी है। वहीं गले में खराश भी देखने को मिल रही है। बार-बार मौसम में बदलाव के कारण मरीजों को ठीक होने में 7 से 8 दिन का समय लग रहा है। छोटे बच्चों को जल्दी से सर्दी, खांसी, बुखार हो रहा है। सिविल सर्जन डॉक्टर जगदीश घोरे ने कहा कि मौसम के बदलाव को देखते हुए सेहब बिगड़ रही है। तबीयत बिगडऩे पर तुरंत डॉक्टर्स को दिखाएं। वहीं लंबे समय तक बीमार होने पर जरूरी टेस्ट कराएं।

पिछले एक सप्ताह से तापमान में बनी हुई है गिरावट

पिछले एक सप्ताह से मौसम में बार-बार बदलाव देखने को मिल रहा है। 1 मार्च को जहां रात का तापमान 17.7 डिग्री तक पहुंच गया था, वहीं 8 मार्च का तापमान 12.7 डिग्री दर्ज किया गया। एक सप्ताह से तापमान 15 डिग्री और उससे कम बना हुआ है। जिससे लोगों को मार्च में भी ठंड का एहसास हो रहा है। वैसे लोगों का मानना है कि होली दहन के बाद ही ठंड की विदाई होती है। मौसम विभाग ने भी आने वाले सप्ताह से तापमान में बढ़ोत्तरी और गर्मी बढऩे की संभावना जताई है। तापमान बढऩे के बाद लोगों को तेज गर्मी का सामना करना पड़ सकता है।

पिछले एक सप्ताह का जिले का तापमान

दिनांक	अधिकतम	न्यूनतम
1 मार्च	34.2	17.7
2 मार्च	34.0	17.2
3 मार्च	34.5	14.8
4 मार्च	33.5	16.2
5 मार्च	31.8	13.5
6 मार्च	28.2	10.8
7 मार्च	31.2	11.5
8 मार्च	32.2	12.7

मंत्री प्रहलाद पटेल के खिलाफ कांग्रेस का प्रदर्शन, पुतला फूंका

भिखारी वाले बयान पर मांगा इस्तीफा

बैतूल। शनिवार को कांग्रेसियों ने मध्यप्रदेश के पंचायत मंत्री प्रहलाद पटेल के विवादास्पद बयान के खिलाफ जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। कलेक्ट्रेट के पास आयोजित इस प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मंत्री का पुतला फूंका और जमकर नारेबाजी की। पुतला जलाने के दौरान पुलिस और कांग्रेसियों के बीच तीखी झड़प भी हुई। पुलिस ने पुतला बुझाने के लिए मौके पर फायर ब्रिगेड को बुलाया और वाटर कैनन से पुतले को बुझाने की कोशिश की, लेकिन कांग्रेस कार्यकर्ता पुतला जलाने में सफल रहे। प्रदर्शन से पहले, कांग्रेस कार्यकर्ता जिले भर से मुख्य सडक़ पर स्थित जिला उद्योग केंद्र परिसर के सामने इकट्ठा हुए थे, जहां उन्होंने पंचायत मंत्री

प्रहलाद पटेल के भिखारी वाले बयान की कड़ी निंदा की। कांग्रेसियों ने पटेल के बयान को भाजपा की मानसिकता से जोड़ा और इसे पूरी पार्टी की विचारधारा के खिलाफ बताया। इस दौरान कांग्रेस जिलाध्यक्ष हेमंत वागदरे, आदिवासी कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष रामू टेकाम, प्रदेश सचिव समीर खान, मनोज मालवे समेत जिले के कई कांग्रेसी नेता मौजूद थे। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने महिला दिवस के मौके पर राज्यपाल के नाम ज्ञापन महिला कार्यकर्ताओं के जरिए एसडीएम को सौंपा। ज्ञापन में मंत्री प्रहलाद पटेल के खिलाफ कार्रवाई की मांग की गई और कहा गया कि उन्होंने सार्वजनिक रूप से प्रदेश की जनता को भिखारी कहा है, जो पूरी तरह से निंदनीय और आपत्तिजनक है। कांग्रेस का कहना था कि पटेल ने अपने बयान पर कोई खेद नहीं जताया, बल्कि वह अपनी बात पर अडिग हैं। कांग्रेस ने इस मामले में मंत्री पटेल से सार्वजनिक रूप से माफी मांगने और उन्हें मंत्रिमंडल से हटाने की मांग की। धरना प्रदर्शन में आदिवासी कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष रामू टेकाम, पूर्व विधायक निलय डागा, संभागीय प्रवक्ता हेमंत पगारिया, कांग्रेस सेवादल अध्यक्ष अनुराग मिश्रा, रजनीश मंगू सोनी, शुभम बोरवार सहित बड़ी संख्या में कांग्रेसी मौजूद थे।

श्री विनायकम स्कूल ने टॉपर्स को एकेडमिक अवॉर्ड से किया अलंकृत

बैतूल। विगत 23 वर्षों से संचालित जिले के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान श्री विनायकम स्कूल में एकेडमिक अवॉर्ड समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें स्कूल के मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रगान के साथ हुआ, जिसके बाद मां सरस्वती के पूजन के साथ ज्ञान की महत्ता का आह्वान किया गया। विद्यालय के प्राचार्य श्याम साहू ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्री विनायकम स्कूल विगत 23 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दे रहा है। यह संस्थान केवल शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ साथ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को भी प्राथमिकता देता है। यही कारण है कि विद्यालय की छात्रा पलक राठौर और रोशनी पवार ने जिला मेरिट सूची में स्थान प्राप्त किया, जबकि यश पवार ने प्रदेश स्तर की मेरिट सूची में अपनी जगह बनाई। यह स्कूल की प्रभावी शिक्षण पद्धति और विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत का परिणाम है। विद्यालय में आयोजित इस सम्मान समारोह में टॉपर्स को एकेडमिक अवॉर्ड से अलंकृत किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने भी अपने अनुभव साझा किए और अपनी सफलता का श्रेय विद्यालय की समग्र शैक्षणिक योजनाओं और उनके प्रभावी क्रियान्वयन को दिया। विद्यालय प्रबंधन ने बताया कि श्री विनायकम स्कूल हमेशा से अपने विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध रहा है। विद्यालय के प्रभावी शिक्षण कार्यक्रम और रणनीतियों के कारण छात्र-छात्राएं हर वर्ष उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। स्कूल प्रबंधन ने सभी टॉपर्स को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई दी और भविष्य में भी इसी तरह का प्रदर्शन बनाए रखने की शुभकामनाएं दीं। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों, अभिभावकों और अतिथियों की भी उपस्थिति रही। सम्मान समारोह के दौरान विद्यार्थियों ने अपने अनुभव साझा किए और विद्यालय की शिक्षण पद्धति की सराहना की। समारोह के अंत में विद्यालय प्रबंध कार्यकारिणी से कमलेश खासदेव, अमित मालवी, संजय राठौर एवं भोजराज चढ़ोकार ने विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व आने वाले पर्यटकों को मिलेगा नया अनुभव

भौरा से जुड़े 19 पर्यटन स्थलों को विकसित करने के आदेश

बैतूल। मध्यप्रदेश के सतपुड़ा टाइगर रिजर्व (चूरना जोन) में सालभर सैकड़ों पर्यटक वन्यजीवों और प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेने आते हैं। इस जंगल सफारी के लिए पर्यटकों को भौरा से होकर ही गुजरना पड़ता है, लेकिन अब यहां आने वाले सैलानियों को सिर्फ जंगल सफारी तक सीमित नहीं रहना पड़ेगा। विधायक गंगा सज्जन सिंह उइके के प्रस्ताव पर प्रशासन ने मुहर लगा दी है, जिससे क्षेत्र के 19 प्रमुख ऐतिहासिक, धार्मिक और प्राकृतिक स्थलों को टूरिज्म सर्किट में जोड़ा जाएगा। बैठक के बाद बैतूल कलेक्टर कार्यालय से जारी पत्र में स्पष्ट किया गया कि विधायक उइके के प्रस्ताव को प्रशासन की मंजूरी मिल चुकी है और इसे आगे की कार्रवाई के लिए मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड, भोपाल को भेज दिया गया है। अब इस प्रस्ताव पर टूरिज्म बोर्ड आगे की योजना तैयार करेगा, जिससे पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में ठोस कार्य किया जा सके।

बैतूल के भौरा से जुड़े ये 19 पर्यटन स्थल- सतपुड़ा टाइगर रिजर्व (चूरना जोन) के लिए आने वाले पर्यटकों को अब पास के इन दर्शनीय स्थलों पर भी घूमने का अवसर मिलेगा। हाल ही में हुई एक बैठक में प्रभारी मंत्री ने भी पर्यटन को बढ़ावा देने पर जोर दिया और कहा कि सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के अलावा अन्य पर्यटक स्थलों को भी विकसित किया जाए, ताकि यहां आने वाले सैलानियों को बेहतर अनुभव मिले। कलेक्टर ने पर्यटन विभाग और संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि इन स्थलों पर आवश्यक सुविधाओं का सर्वे कर प्रस्ताव तैयार करें और प्राथमिकता के आधार पर कार्य किया जाए। बैठक के बाद बैतूल कलेक्टर कार्यालय से जारी पत्र में स्पष्ट किया गया कि विधायक उइके के प्रस्ताव को प्रशासन की मंजूरी मिल चुकी है और इसे आगे की कार्रवाई के लिए मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड, भोपाल को भेज दिया गया है। अब इस प्रस्ताव पर टूरिज्म बोर्ड आगे की योजना तैयार करेगा, जिससे पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में ठोस कार्य किया जा सके।

विधायक बोलीं - पर्यटन को मिलेगा बढ़ावा, स्थानीय रोजगार के अवसर बढ़ेंगे- विधायक गंगा सज्जन सिंह उइके ने कहा कि यदि इन स्थलों को सरकार के टूरिज्म प्लान में शामिल कर सुविधाएं विकसित की जाएं, तो यह पूरा क्षेत्र एक महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्र के रूप में उभर सकता है। सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के लिए जब पर्यटक भौरा तक आते हैं, तो अगर उन्हें अन्य दर्शनीय स्थलों की जानकारी और सुविधाएं मिलें, तो वे यहां ज्यादा समय बिताएंगे। इससे स्थानीय होटल, ट्रांसपोर्ट, गाइड, हस्तशिल्प और खान-पान व्यवसायों को सीधा लाभ होगा। अगर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के साथ इन 19 पर्यटन स्थलों को जोड़ा जाता है, तो भौरा जल्द ही पर्यटन के नक्शे पर एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभरेगा।

शास्त्रों में भी नारी ही नारायणी : सुधाकर पंवार

बैतूल। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर उबुन्तु हार्ट हॉस्पिटल भोपाल एवं विजय सेवा न्यास बैतूल के तत्वावधान में विजय सेवा न्यास में आयोजित निशुल्क महिला स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, पूर्व सांसद ज्योति धुर्वे, नपाध्यक्ष बैतूल पार्वती बारस्कर द्वारा किया गया। जिला भाजपा महिला मोर्चा द्वारा आयोजित महिला वित्तीय सशक्तिकरण, महिला रोग निदान व अंगदान पंजीकरण कार्यक्रम संबोधित करते भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार ने कहा कि नारी का सम्मान समाज और राष्ट्र के विकास की पहली सीढ़ी है। आज हम सभी को महिलाओं से प्रेरणा लेते हुए शास्त्र सम्मत नारी को नारायणी मानकर कार्य करने की जरूरत है। देश के चहुंमुखी विकास हेतु नारी शक्ति की बडी भूमिका हर क्षेत्र में दिखाई दे रही है। इस अवसर पर बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने सभी को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं देते कहा कि जहां महिलाओं का सम्मान है, वह देश आगे बढ़ रहे हैं, महिलाओं को आगे बढ़ाना नेतृत्व देना जरूरी है, जिससे परिवार, समाज, प्रदेश और देश समृद्ध होगा, महिलाओं को समानता का अधिकार देने के साथ उन्हें निर्णय में भागीदारी देना

भी जरूरी है। प्रधानमंत्री द्वारा महिलाओं की लगातार चिंता करते उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं । इसके पश्चात विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मानित किया। स्वास्थ्य शिविर में विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा हृदय रोग, शुगर रोग सहित अन्य बीमारियों का निशुल्क परीक्षण, उपचार एवं परामर्श कर दवाइयां का वितरण किया जाएगा। कार्यक्रम में अतिथियों के अलावा रिटायर्ड सिविल सर्जन डॉ. अशोक बारंगा, रेडक्रास सोसायटी चेयरमैन डॉ.अरुण जयसिंहपुरे, डॉ. मण्डल सुब्रतो, डॉ. रेणुका गोहिया, डॉ. महिमा सोनवानी, भाजपा जिला उपाध्यक्ष रश्मि साहू, जिला मंत्री शक्ति धुर्वे, भाजपा महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष ममता मालवी, कोठीबाजार मंडल अध्यक्ष विक्रम वैद्य, गंज मंडल अध्यक्ष विकास मिश्रा, वर्षा खाडे, माधुरी साबले,लाजवंती नागले, शोभा देशमुख, ममता भटट, ममता यादव, कविता रघुवंशी सहित पार्षदगण, चिकित्सकगण, स्वास्थकर्मी, स्वसहायता समूह की महिलाएं, पार्टी पदाधिकारी, कार्यकर्ता, गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

महिला बाल विकास द्वारा महिलाओं का सम्मान समारोह आयोजित- बैतूल/भौंरा। नगर परिषद के विजय भवन में महिला बाल विकास विभाग द्वारा महिला दिवस का आयोजन किया गया जिसमे महिलाओं को उनके अधिकार एवं शासन द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में सीडीपीओ दीपमाला अहाके द्वारा जानकारी दी गई। विभाग द्वारा संचालित योजना, विभिन्न महिला जनून, महिला अपराध के बारे में माधवी घरसर सुपरवाइजर द्वारा जानकारी प्रदान की गई। साथ ही मुख्यमंत्री द्वारा लाडली बहना के खाते में राशि हस्तांतरण का सीधा प्रसारण भी दिखाया गया। इस अवसर पर भाजपा मंडल अध्यक्ष नीतू गुप्ता, पार्षद कविता भास्कर, सुनीता पंदराम, कुसुम परसाई, सीडीपीओ समस्त सुपरवाइजर, एवं महिला बालविकास के कर्मचारी एवं बडी सख्या में लाडली बहने उपस्थिति रही।

महिला दिवस पर महिलाओं का हुआ सम्मान

बैतूल/मुलताई। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नगर के अनेक सामाजिक संगठन एवं शासकीय कार्यालय में महिला सशक्तिकरण को लेकर कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें महिलाओं का सामाजिक जीवन में योगदान के लिए महिलाओं का सम्मान किया गया। नगर पालिका कार्यालय में नपा अध्यक्ष वर्षा

गडेकर की उपस्थिति में महिला बाल विकास विभाग द्वारा महिलाओं का सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया वहीं शासकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में ब्लॉक स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर पंचम, डॉ कृष्ण धोटे, भाजपा मंडल अध्यक्ष गणेश साहू की उपस्थिति में नया परिंदा फाउंडेशन के द्वारा शासकीय सामुदायिक स्वास्थ्य के मरीजों को चाकलेट , बिस्किट एवम मिष्ठान का वितरण किया गया। साथ ही महिला डॉक्टर, महिला कर्मियों सहित वहां उपस्थित सभी महिलाओं का सम्मान किया गया। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की सभी कामगार महिलाओं का सम्मान कर उनके स्वास्थ्य सुविधाओं में योगदान के लिए सराहना की गई। इस अवसर पर भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष गणेश साहू, कृष्णा धोटे, शुभम पाण्डग्रे, महावीर परिहार, अजीत राजपूत, सुमित खुराना, शजल शिवहरे, योगेश अम्बुलकर, बाबू मूलक सहित एक नया परिंदा फाउंडेशन के सदस्य कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

महिलाओं संबंधित समस्याओं का होगा त्वरित निदान : वर्षा गडेकर

महिला बाल विकास विभाग द्वारा नगर पालिका कार्यालय में महिला सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्षा वर्षा गड़ेकर, सभापति शिल्पा शर्मा,कुसुम मारुति पवार सहित अन्य उपस्थित महिलाओं ने एक दूसरे का सम्मान किया। इस अवसर पर नगर की महिलाओं ने नगर पालिका पहुंचकर नगर की प्रथम महिला अध्यक्ष वर्षा गडेकर को सम्मानित किया नगर पालिका अध्यक्ष गड़ेकर ने कहा कि उनका प्रयास है कि अभी जिस पद पर है उसे पद पर रहते हुए नगर के लोगों की सेवा कर सके एवं महिलाओं की समस्याओ का त्वरित समाधान कर सके।

2 लाख 73 हजार से अधिक लाड़ली बहनों को राशि की अंतरित

बैतूल। शनिवार को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर प्रदेश की महिलाओं को सिंगल क्लिक के माध्यम से मुख्यमंत्री मोहन यादव ने राशि वितरित की। इसी तारतम्य में लाइव टेलीकास्ट के माध्यम से जिलास्तरीय कार्यक्रम बैतूल कलेक्ट्रेट के सभाकक्ष में आयोजित किया गया। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग गौतम अधिकारी ने बताया कि मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के तहत सिंगल क्लिक के माध्यम से जिले की 2 लाख 73 हजार 513 लाड़ली बहनों के खाते में 33 करोड़ 18 लाख 98 हजार 250 रुपए की राशि अंतरित की गई है। इनमें जनपद पंचायत बैतूल की 30692, जनपद पंचायत आमला की 25819, जनपद पंचायत आठनेर 18644, जनपद पंचायत भैंसदेही 21428, जनपद पंचायत भीमपुर 25985, जनपद पंचायत चिचोली 15176, जनपद पंचायत घोड़ाडोंगरी 27355, जनपद पंचायत मुलताई 24807, जनपद पंचायत प्रभात पट्टन 23010, जनपद पंचायत शाहपुर 18466 तथा नगर पालिका बैतूल 14323, नगर पालिका आमला की 3733, नगर पालिका मुलताई 4503, नगर पालिका सारणी 9026, नगर परिषद आठनेर 2149, नगर परिषद बैतूल बाजार 1899, नगर परिषद भैंसदेही 1984, नगर परिषद चिचोली 1740, नगर परिषद घोड़ाडोंगरी की 1434, नगर परिषद शाहपुर की 1340 बहनें शामिल हैं।

किस गंभीर बीमारी से जूझ रही आलिया

आलिया ने एक बार कहा कि मैं बचपन से ही ज़ोन आउट हो जाती थी। क्लास रूम में या बातचीत के दौरान मेरा ध्यान भटक जाता था। हाल ही में, मैंने एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण करवाया और पता चला कि मैं एडीएचडी स्पेक्ट्रम पर हाई हूं। जब भी मैंने अपने दोस्तों को इसके बारे में बताया, तो उन्होंने कहा कि वे कहते कि हमें हमेशा से पता था।

फिल्म इंडस्ट्री बॉलीवुड की टॉप सफल एक्ट्रेस की लिस्ट में शामिल खूबसूरत और टैलेंटेड एक्ट्रेस आलिया भट्ट अक्सर ही किसी न किसी वजह से सुर्खियों में रहती हैं। हाल ही में एक्ट्रेस ने खुद से जुड़ा एक ऐसा खुलासा किया, जिसे जानकर हर कोई हैरान हो गया। आलिया ने अपनी एक बीमारी का राज खोला, जिससे वह बचपन से ही जूझ रही हैं। लेकिन, अब उन्हें बेटी राहा को लेकर डर सताने लगा। उन्होंने खुलासा किया कि उन्हें एंजाइटी और एडीएचडी (अटेंशन डिफिसिट हाइपरएक्टिव डिसऑर्डर) है। यानी उन्हें चीजों पर ध्यान लगाने में दिक्कत होती है और उनका दिमाग बार-बार भटक जाता है।

आलिया ने बताया कि उन्हें लोगों के बीच रहते हुए अजीब सा लगने लगा था, जैसे कुछ ठीक नहीं है। उनकी बॉडी भीड़ में अचानक गर्म हो जाती और वो परेशान हो जाती थीं। तब जाकर उन्हें अपनी हालत का अंदाजा हुआ। एक्ट्रेस ने कहा कि ये सब समझ में तब आया जब उन्होंने टेस्ट करवाया, जिसमें पक्का हुआ कि वो एंजाइटी और एडीएचडी से जूझ रही हैं। वो अभी इससे डील कर रही हैं और धीरे-धीरे ठीक होने की राह पर हैं। आलिया ने यह भी स्पष्ट किया कि उन्होंने दवाइयों का सहारा नहीं लिया, हालांकि वो ले सकती थीं। मगर, खुद फैसला किया कि वो अपने तरीके से इस परेशानी से निपटेंगी और अब उन्हें लगता है कि वो इसे अच्छे से मैनेज कर पा रही हैं।

मां बनने के बाद उनकी ये लड़ाई और सख्त हो गई, क्योंकि वो अपनी बेटी राहा से जुड़ी कोई भी छोटी-बड़ी बात नहीं भूलना चाहतीं। उन्होंने कहा कि राहा को लेकर कुछ भूल जाना उनका सबसे बड़ा डर है, जिसने उन्हें और मजबूत बनाया। आलिया ने यह भी बताया कि पहले उन्हें बहुत तकलीफ हुई, जैसे पार्टी में असहज होना या कई चीजों पर एक साथ फोकस न कर पाना। लेकिन, अब वो लगातार इस पर काम कर रही हैं और उम्मीद है कि जल्द पूरी तरह ठीक हो जाएंगी।

आलिया भट्ट के मुताबिक, उनकी जिंदगी में बहुत कम ऐसे पल आते हैं, जब वे खुद को पूरी तरह से मौजूद महसूस करती हैं। उनमें से एक है जब वे अपनी बेटी राहा के साथ होती हैं। उन्होंने कहा कि मुझे समझ में आया कि मैं कैमरे के सामने शांत क्यों रहती हूं। मैं उस पल में सबसे ज़्यादा प्रेजेंट रहती हूं। जब भी मैं कैमरे के सामने होती हूं, तो मैं उस किरदार के रूप में मौजूद होती हूं जिसे मैं निभा रही होती हूं। इसके अलावा जब मैं राहा के साथ होती हूं, तो मैं सबसे ज़्यादा प्रेजेंट रहती हूं। मेरी जिंदगी में यही दो पल हैं जब मैं सबसे ज्यादा शांत रहती हूं।

'एडीएचडी' बचपन के सबसे सामान्य न्यूरो डेवलपमेंटल डिसऑर्डर में से एक है। न्यूरो डेवलपमेंटल का अर्थ है मस्तिष्क के बढ़ने और विकसित होने के तरीके में कुछ गड़बड़ होना। एडीएचडी का आमतौर पर बचपन में पहली बार निदान किया जाता है और अक्सर जवानी तक रहता है। एडीएचडी वाले बच्चों को ध्यान देने में परेशानी हो सकती है। उनके व्यवहार को कंट्रोल करने में परेशानी हो सकती है। वो बिना कुछ सोचे-समझे बिना कुछ भी कर सकते हैं या अत्यधिक सक्रिय हो सकते हैं।

इस हसीना के प्यार में पागल कार्तिक आर्यन

कार्तिक आर्यन पिछले साल फिल्म 'भूल भुलैया 3' के जरिए बॉक्स ऑफिस की दुनिया को हिला चुके हैं। इस समय कार्तिक अपने आने वाले प्रोजेक्ट्स पर काम कर रहे हैं। हाल ही में खबर आई थी कि वे फिल्म 'आशिकी 3' में एंट्री कर सकते हैं। इस बीच कार्तिक आर्यन को लेकर एक और बड़ी खबर आ रही है। मानें तो कार्तिक आर्यन को सच्चा प्यार मिल गया। कुछ समय पहले ही कार्तिक आर्यन को 'पुष्पा 2' की एक हसीना के साथ पार्टी करते हुए देखा गया। जैसे ही कैमरे ने कार्तिक आर्यन और इस हसीना को कैप्चर करना चाहा, वैसे ही इन्होंने अपना चेहरा छिपाने की कोशिश की। ऐसा होते ही कार्तिक आर्यन के फैंस का शक काफी गहरा गया।

'पुष्पा 2' स्टार श्री लीला की जो कि हाल ही में कार्तिक आर्यन के घर पर हुए एक फैमिली फंक्शन में पहुंची थीं। यहां पर कार्तिक आर्यन के साथ श्री लीला मस्ती करती नजर आईं। इस फंक्शन में श्री लीला डांस करती दिखीं। वहीं कार्तिक आर्यन उनका वीडियो बना रहे थे। कार्तिक आर्यन की बहन कृतिका ने मेडिकल

फील्ड में अचीवमेंट हासिल किया है। ऐसे में परिवार के लोगों ने कृतिका के लिए एक छोटी सी पार्टी रखी थी।

इस पार्टी में श्री लीला कार्तिक आर्यन के साथ धमाल मचाती दिखीं। अब फैंस को लग रहा है कि कार्तिक आर्यन और श्री लीला के बीच कुछ चल रहा है। कार्तिक आर्यन और श्री लीला फिलहाल फिल्म 'आशिकी 3' में भी काम कर रहे हैं। कुछ समय पहले ही खबर आई थी कि फिल्म 'आशिकी 3' को 2025 में दिवाली के मौके पर रिलीज किया जाएगा। ऐसे में कार्तिक आर्यन और श्री लीला के अफेयर की खबर उनकी फिल्म के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है। कुछ देर में ही कार्तिक आर्यन और श्री लीला के एक छोटे से वीडियो ने सोशल मीडिया को हिलाकर रख दिया।

रियल बॉक्स

परदे पर नाकाम मोहब्बत के भी कई किस्से

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

जब से फिल्में बनना शुरू हुई, प्रेम कथाओं का कथानकों में सबसे ज्यादा उपयोग किया गया। विषय कोई भी हो, प्रेम उसमें स्थाई भाव की तरह समाहित रहा। यहां तक कि युद्ध कथाओं और डाकुओं की फिल्मों में भी प्रेम को किसी न किसी तरह जोड़ा गया। न सिर्फ जोड़ा गया, बल्कि उस कथा को अंत तक निभाया भी। प्रेम कहानी में प्रेमी और प्रेमिका दोनों की भूमिका होती है, इसलिए कथानक को विस्तार देना मुश्किल नहीं होता। लेकिन, कुछ फ़िल्में ऐसी भी बनी, जिनमें प्यार को सिर्फ एकतरफा दिखाया गया। यानी प्रेमी या प्रेमिका में से कोई एक ही आगे कदम बढ़ाता है, दूसरा या तो वहीं खड़ा रहता है या पीछे हट जाता है। देखा गया कि ऐसी फिल्मों का कथानक हमेशा ही उलझा हुआ रहा। क्योंकि, जरूरी नहीं, जिससे आप प्यार करो, वह भी आप से प्यार करे। ऐसी फिल्मों का लंबा हिस्सा प्रेम के बिखरे हिस्से को समेटने में ही निकल जाता है। लेकिन, प्यार अधूरा हो या एकतरफा, दर्द बहुत देता है। चंद फ़िल्में ऐसी भी बनी जिनमें एकतरफ़ा प्रेम हिंसा के अतिरेक तक पहुंचा। आशय यह कि अपनी मोहब्बत को पाने के लिए खून तक बहाया गया। फिर भी क्या उन्हें प्यार मिला हो, ये जरूरी नहीं है।

इस तरह की एकतरफा दर्द भरी प्रेम कथा पर बनी फिल्म 'देवदास' एक तरह से मील का पत्थर है। इस फिल्म की कहानी शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के बंगाली उपन्यास पर आधारित है। इस एकतरफा प्रेम कथा पर अलग-अलग भाषाओं में कई फ़िल्में बनी। पहली बार 'देवदास' 1928 में रिलीज़ हुई थी। सबसे पहले बंगाली में बनी, फिर हिंदी में ही ये तीन बार बन चुकी है। साउथ में भी 'देवदास' पर फिल्म बनाई जा चुकी है। इस कहानी में एक वैश्या के प्यार में देवदास खुद को बर्बाद कर लेता है। जबकि, देवदास के इश्क में चंद्रमुखी अपने देव बाबू को भगवान मानने लगती है! एकतरफा प्यार में खुद को तबाह कर देने की सबसे चर्चित दास्तां 'देवदास' ही है। इसी कथानक पर संजय लीला भंसाली ने भी 2002 में 'देवदास' बनाई। फिल्म में मुख्य किरदार देव बाबू (शाहरुख खान), पारो यानी ऐश्वर्या राय और चंद्रमुखी यानी माधुरी दीक्षित ने निभाई थी। फिल्म में देव बाबू पारो से बहुत प्यार करता है। लेकिन, उसकी शादी नहीं हो पाती। वह एकतरफा प्यार में जब कुछ नहीं कर पाता, तो खुद को तबाह करता है। फिल्म के अंत में देव पारो के दरवाजे पर जाकर दम तोड़ देता है। ये फिल्म एकतरफा प्यार की सबसे सशक्त फिल्म मानी जाती है।

1999 में संजय लीला भंसाली ने ही सलमान खान, ऐश्वर्या राय बच्चन और अजय देवगन लेकर 'हम दिल दे चुके सनम' बनाई। इसमें समीर (सलमान खान) और नंदिनी (ऐश्वर्या राय) एक-दूसरे से बेइंतहा मोहब्बत करते हैं। लेकिन, अचानक परिवार वाले नंदिनी की शादी वनराज (अजय देवगन) से कर देते हैं। इसके बाद नंदिनी का प्यार समीर उससे दूर हो जाता है। वनराज नंदिनी से पहली नजर से प्यार करता है, और शादी के बाद उसका प्यार और बढ़ता है। लेकिन, किसी भी एकतरफा प्यार का सबसे बड़ा इम्तिहान तब होता है, जब उसे पता चलता कि उसकी पत्नी किसी दूसरे से प्यार करती है। यह फिल्म एकतरफा प्यार की ताकत को बहुत आगे लेकर जाती है। वनराज दोनों प्रेमियों को मिलाने की कोशिश में करता है। वनराज अपनी पत्नी को उसके प्रेमी से मिलाने लेकर जाता है। उसकी आंखों में आंसू होते हैं, लेकिन फिर भी वो पीछे नहीं हटता। किंतु, नंदिनी यह स्वीकार नहीं करती और पति के साथ लौट आती है। ये अपनी तरह की अनोखी प्रेम कहानी थी।

ऐसी चंद कहानियों में एक फिल्म यश चोपड़ा की 'डर' (1993) भी है जिसमें एकतरफा प्यार का हिंसक रूप सामने आता है। 'डर' नाकाम प्रेमियों की उस कहानी को बयां करती है, जिन्हें प्रेमी को खोने का डर सबसे ज्यादा होता है। शाहरुख़ खान (राहुल) फिल्म में जूही चावला (किरण) से एकतरफा प्यार करता है। जब जूही उसके प्यार को स्वीकार नहीं करती तो शाहरुख का प्यार पागलपन की हद तक चला जाता है। लेकिन, किरण तो सुनील (सनी देओल) को चाहती थी। 'डर' में एकतरफा प्यार का जो रूप दिखाया, वो काफी भयानक है। अंत में राहुल को किरण का पति सुनील मार देता है। शाहरुख खान की एक और फिल्म 'कभी हां कभी ना' (1994) शुरुआती फिल्म थी। फिल्म की कहानी में शाहरुख़ एक

लड़की सुचित्रा कृष्णमूर्ति को चाहता हैं, पर वो किसी और को। लेकिन, इस फिल्म का अंत खुशनुमा होता है। अमिताभ बच्चन की हिट फिल्म 'मुकद्दर का सिकंदर' में भी एकतरफा प्यार के दो किस्से थे। कथानक में एक गरीब बच्चे की मदद एक अमीर लड़की करती है। वो बच्चा उसे प्यार करने लगता है। बड़े होने तक और मरने तक उसे यह प्यार रहता है। लेकिन, वो लड़की किसी और को चाहती है। 'मुकद्दर का सिकंदर' में वो गरीब बच्चा अमिताभ थे और अमीर लड़की जयाप्रदा जिससे वे एकतरफा प्यार करते हैं। वहीं रेखा अमिताभ को चाहती है। फिल्म में अमजद खान भी रेखा से एकतरफा प्यार करते थे।

आमिर खान की फिल्म 'लगान' (2001) भी ऐसी ही फिल्म थी, जिसमें एकतरफा प्यार का बहुत हल्का सा इशारा था। इस फिल्म में एकतरफा प्यार पनपता है भुवन (आमिर खान) के लिए एलिजाबेथ में। जब एलिजाबेथ गांव वालों को क्रिकेट सिखाने में मदद करती है, उसी दौरान वह अपना दिल भुवन को दे देती है। लेकिन, भुवन को इस बात का पता नहीं होता। क्योंकि, वह तो गौरी से प्यार करता है। फिल्म के अंत में जरूर दर्शकों को इस एकतरफा मोहब्बत का अंदाजा मिलता है। 2001 में ही आई 'दिल चाहता है' की कहानी में भी एकतरफा प्यार था। इस फिल्म ने दोस्ती में नया अध्याय जरूर जोड़ा। फिल्म की कहानी में तीनों दोस्तों को प्यार होता है। सिड (अक्षय खन्ना) को तलाकशुदा महिला तारा (डिंपल कपाड़िया) से एकतरफा प्यार हो जाता है। लेकिन, तारा उसे दोस्त ही समझती रहती है। जबकि, सिड को तारा की दोस्ती प्यार लगती है। अंत में उसका दिल टूट जाता है। ऐसी ही एक फिल्म 'कॉकटेल' आई थी, जिसकी कहानी एकतरफा आशिकों के लिए थी। ऐसा नहीं कि लड़का ही एकतरफा आशिक होता है। लड़की को भी एकतरफा इश्क हो सकता है। फिल्म में वही दिखाया गया। गौतम (सैफ अली) वेरॉनिका (दीपिका पादुकोण) एक जोड़े की तरह साथ रहते हैं। लेकिन, दोनों के बीच प्यार पूरा नहीं होता। इनके साथ डायना पेंटी (मीरा) भी रहती है। जब गौतम को मीरा से इश्क हो जाता है, तो वेरोनिका भी उससे प्यार करने लगती है। तब मामला गंभीर हो जाता है।

1997 में आई फिल्म 'दिल तो पागल है' में निशा (करिश्मा कपूर) और राहुल (शाहरुख खान) अच्छे दोस्त होते हैं। लेकिन निशा के दिल में राहुल के लिए दोस्त से बढ़कर जगह होती है। पर, वह यह बात राहुल से नहीं कहती। लेकिन राहुल की जिंदगी में जब पूजा (माधुरी दीक्षित) की एंट्री होती है, तो निशा का प्यार दिल में ही रह जाता है और राहुल-पूजा प्रेमी जोड़ा बन जाते हैं। करण जौहर की फिल्म 'ऐ दिल है मुश्किल' (2016) में एकतरफा प्यार की ताकत को दिखाया गया। किस तरह लड़के को लड़की से प्यार होता है लेकिन लड़की किसी और को चाहती है। रणबीर कपूर ने फिल्म में अयान का किरदार निभाया था। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर तो कोई कमाल नहीं किया। लेकिन, एकतरफा मोहब्बत करने वालों को सीख जरूर दी। दो अजनबी टकराते हैं, फिर रिश्ते की शुरुआत होती है। अयान इसे प्यार समझ लेता है। लेकिन अनुष्का शर्मा (अलिजेह) इस रिश्ते को दोस्ती का नाम देती है। कहानी में अयान को अविजेय से प्यार रहता है। जबकि अलिजेह के लिए अयान सिर्फ एक अच्छा दोस्त होता है। 2005 में आई आदित्य दत्त की फिल्म 'आशि?क बनाया आपने' में सोनू सूद (करण) तनुश्री दत्ता (स्नेहा) से एकतरफ़ा प्यार करते हैं। लेकिन, वे कभी बताते नहीं। लेकिन, जब स्नेहा इमरान हाशमी (विकी) से प्यार करने लगती हैं, तो करण अपने दोस्त विकी के खिलाफ साजिश रचकर उससे सब कुछ छीन लेता है।

आज के दौर में ऐसी फिल्मों में यादगार फिल्म 'रांझणा' (2013) है। आनंद एल राय ने सोनम कपूर, अभय देओल और धनुष को लेकर यह फिल्म बनाई। वाराणसी शहर की पृष्ठभूमि और हिंदू-मुस्लिम धर्मों के दो किरदारों की कहानी है। कुंदन (धनुष) बचपन से ही जोया (सोनम कपूर) से एकतरफा प्यार करता है। लेकिन, जोया जसजीत सिंह (अभय देओल) नाम के छात्र व यूनियन में चुनाव में सक्रिय लड़के से प्यार करती है। कहानी कुछ ऐसा मोड़ लेती है कि कुंदन की एक गलती की वजह से जसजीत सिंह की मौत हो जाती है। इसके बाद एक तरफा मुहब्बत एक नए मुकाम पर पहुंच जाती है। कुंदन अपना सब कुछ पहले ही जोया पर हार चुका होता है। अंत में जोया के कहने पर सब जानते हुए अपनी जान तक दे देता है। रणबीर कपूर की फिल्म 'ये जवानी है दीवानी' में भी दीपिका पादुकोण को एकतरफा प्यार करते दिखाया गया। 'बर्फी' फिल्म में रणबीर कपूर को इलियाना डिक्रूज के एकतरफा प्यार में दीवाना दिखाया था। इसके अलावा मेरी प्यारी बिंदु, रॉकस्टार, मोहब्बतें और 'जब तक है जान' भी वे फ़िल्में हैं जिनका कथानक एकतरफा प्यार पर केंद्रित था।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

अशोक जोशी

वुमन्स डे विशेष

हिंदी फिल्मों की नारी संघर्ष से कभी नहीं हारी

एक दिन पहले ही महिला दिवस मनाया गया। समाज के सभी क्षेत्रों में नारी के योगदान पर खूब चर्चाएं हुई। लेकिन, फिल्मों में महिलाओं के योगदान पर ज्यादा

बातें कहने-सुनने में नहीं आती। जबकि, हकीकत यह है कि हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा में नारियों को उल्लेखनीय योगदान रहा। क्योंकि, नारी सिनेमा का सबसे अनिवार्य और सशक्त घटक है। नारी के बिना सिनेमा भाव विहीन नजर आता है।

जिन दिनों सिनेमा का प्रादुर्भाव हुआ, सिनेमा में महिलाओं का काम करना प्रतिबंधित था। लेकिन, तब भी सिनेमा का परदा नारी विहीन नहीं हुआ। तब पुरुष कलाकार ही नारी का स्वांग रचकर दर्शकों को गुदगुदाया करते थे। जब परदे पर नायिकाओं का पर्दापण हुआ, नारी चरित्र सिनेमा में सशक्त आकार लेने लगे। आज जब सिनेमा सवा सौ साल से ज्यादा का सफर तय कर चुका है, नारी पात्र भारतीय सिनेमा की आत्मा बनकर उसमें समा गए। हिंदी सिनेमा में वी शांताराम नारी समस्या को पर्दे पर सशक्त तरीके से उठाने वाले एक सशक्त फ़िल्मकार थे। उन्होंने प्रभात और राजकमल फिल्म निर्माण संस्थाओं के जरिए एक से एक बेजोड़ समाज सुधार की कलात्मक फिल्में बनाकर भारतीय सिनेमा मे नारियों के महत्व को प्रतिपादित किया। उनकी फिल्मों में 1937 में प्रदर्शित 'दुनिया न माने' उल्लेखनीय है। बेमेल विवाह की समस्या पर आधारित यह फिल्म स्त्रीत्व की गरिमा को बेहद खूबसूरती से उभारती है। शांता आप्टे ने नायिका नीरा की भूमिका में प्राण फूंक दिए थे। नारी को को भोग्या, चरणों की दासी और उपभोक्ता वस्तु मानने वालों को यह फिल्म करारा सबक सिखाती है। आज की 21वीं सदी की फिल्मों में भी यह जज्बा दिखाई नहीं देता।

1936 में निर्मित 'अछूत कन्या' ब्राह्मण लड़के और अछूत लड़की की एक दारुण प्रेम कहानी है। यह एक दुखांत फिल्म है। इस वर्जित और उपेक्षित विषय को पहली बार फिल्म के माध्यम से लोगों के बीच लाने का साहसिक प्रयास किया गया था। इससे मिलते जुलते विषय पर 1959 में विमल राय ने 'सुजाता' बनाई, जो फिर से अछूत लड़की और ब्राह्मण लड़के के प्रेम की कहानी है। विमल राय की यह फिल्म आज़ादी के बाद इस विषय पर बनाई गई पहली फिल्म थी। इसी फिल्म में रवीन्द्रनाथ ठाकुर कृत नाटक चांडालिका का मंचन किया जाता है। इस नाटक

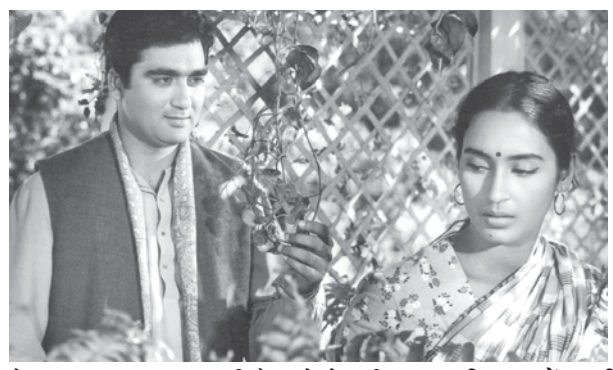

में भगवान बुद्ध अछूत लड़की के हाथों से पानी लेते हैं और सभी जातियों की समानता को व्याख्यायित करते है। 'सुजाता' और उसके बाद हमारे देश में बहुत ही सशक्त सामाजिक सरोकार की फिल्में बनी फिर भी हमारे यहां आज भी अंतर्जातीय और विधवा विवाह पूरी तरह मान्य नहीं हैं। राजकपूर और मीना कुमारी की ख्वाजा अब्बास निर्देशित फिल्म 'चार दिल चार राहें' भी इसी तरह समाज में नारियों की उपेक्षा की कहानी कहती है।

फिल्मों में नारी की स्थिति का चित्रण करने में बीआर चोपड़ा का उल्लेखनीय योगदान रहा। विधवा विवाह को सामाजिक मान्यता दिलाने के लिए उन्होंने 1958 में 'एक ही रास्ता' का निर्माण किया था। यह एक त्रिकोणात्मक कहानी थी। बीआर चोपड़ा ने साहस के साथ फिल्म में विधवा स्त्री का विवाह करवाकर सुधार की एक नई परंपरा को स्थापित किया। इसके बाद समाज में विधवा स्त्रियों के लिए एक नए जीवन को स्वीकार करने का साहस पैदा होने लगा। अगले ही साल उन्होने अविवाहित मातृत्व की समस्या से जूझने वाली स्त्रियों के जीवन के बिखराव और उसकी परिणति को दर्शाने वाली सशक्त फिल्म 'धूल का फूल' का निर्माण किया।

फिल्म में अविवाहित मातृत्व के परिणामस्वरूप जन्म लेनी वाली संतान अवैध घोषित की जाती है और उसका जीवन नारकीय हो जाता है। यह एक बहुत ही संवेदनशील विषय था, जिसे फिल्म द्वारा समाज के सम्मुख लाने का साहस बीआर चोपड़ा ने किया। ये फिल्में समाज

को ऐसी विषम स्थितियों से बचने के लिए आगाह करती थी और उन स्थितियों को बेबाकी से प्रस्तुत कर स्त्रियों के पक्ष में समाज को खड़े होने का साहस प्रदान करती हैं। बीआर चोपड़ा अपनी एक और फिल्म 'इंसाफ का तराजू' में बलात्कार से पीड़ित लडकी को न्याय दिलाते हैं। बलात्कारित स्त्री पीड़िता के रूप में समाज के सम्मुख आने से आज भी डरती है। इस विषय पर बहुत कम फिल्में बनी, इसलिए इसे एक नई साहसपूर्ण प्रस्तुति के रूप में स्वीकार किया गया। 'निकाह' में उन्होने तलाक और हलाला जैसे विषयो को छूने का प्रयास किया, तो उन्हीं की फिल्म 'साधना' समाज में वैश्याओं की स्थिति पर प्रकाश डालने में सफल रहीं।

अपने शैशव काल से ही हिंदी फिल्में स्त्री प्रधान रहीं हैं। हिंदी फ़िल्मकारों ने भारतीय स्त्री के सभी रूपों को फिल्मों में प्रस्तुत किया है। घरेलू स्त्री, कामकाजी स्त्री, किसान स्त्री, विवाहित और अविवाहित स्त्री आदि। जुझारू स्त्री, संघर्षशील स्त्री और अन्याय और अत्याचार से लड़ने वाली स्त्री आदि रूप हिंदी फिल्मों में प्रमुख रूप से आते रहे हैं। महबूब खान द्वारा निर्देशित फिल्म 'औरत' और उसका संशोधित संस्करण 'मदर इंडिया' भारतीय किसान नारी के संघर्ष और त्रासदी की महागाथा है। इसमें ग्रामीण महाजनी सभ्यता की क्रूरता और अत्याचार से लड़ती हुई नारी की मार्मिक कहानी है। जमींदारी अन्याय से लड़ते लड़ते गांवों में डाकुओं की जमात भी तैयार होती है। ग्रामीण सामंती अत्याचार से उत्पन्न डाकू समस्या को उजागर करने वाली फिल्मों में नारी की विवषता को मुझे जीने दो, गंगा जमुना और 'जिस देश में गंगा बहती है' के बाद शेखर कपूर ने 'बैंडिट क्वीन' में पूरे दम के साथ परदे पर उतारा था।

राज कपूर द्वारा निर्मित 'प्रेम रोग' में आभिजात्य परिवार की विधवा युवती का विवाह सामान्य वर्ग के युवक से करवाकर सामाजिक विषमता को मिटाने की पहल की गई। 'राम तेरी गंगा मैली' में भी राज कपूर ने नारी व्यथा को सशक्त रूप से प्रस्तुत किया। इसी श्रेणी में राजीव कपूर निर्देशित 'प्रेमग्रंथ' भी आती है, जो कि यौन शोषण से उत्पीडित नारी को काठ की हांडी के रूप में प्रस्तुत करती है। इस फिल्म के माध्यम से ऐसी लांछित स्त्रियों को समाज में स्वीकार करने की पहल की गई है। कुछ इसी तरह की फिल्म थी राज कुमार संतोषी की 'लज्जा' जिसमें समाज के अलग अलग परिवेशों से आने वाली तीन शोषित स्त्री पात्रों के दारुण शोषण और मुक्ति के संघर्ष को दर्शाया गया था। राजकुमार संतोषी की फिल्म 'दामिनी' में भी बलात्कार से पीड़ित घर की एक नौकरानी को न्याय दिलाने की कहानी को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया था।

श्याम बेनेगल की पहली फिल्म 'अंकुर' भी अछूत औरत और ब्राह्मण आदमी के रिश्ते की कहानी थी। इसके बाद, भुवन शोम, मृगया, भूमिका, मंडी, चक्र आदि फिल्मों में श्याम बेनेगल ने हाशिये पर पड़ी नारियों की सामाजिक स्थिति की दर्द भरी झांकी प्रस्तुत की। प्रकाश झा भी नारी विषय पर फिल्में बनाने में माहिर है। उनकी फिल्म 'दामुल' में अमीर लोगों द्वारा गरीबों का शोषण दिखाया गया। इसके बाद 'मृत्युदंड' में उन्होंने ग्रामीण वातावरण में स्त्री के यौन शोषण और कर्मकांडी धार्मिक व्यवस्था द्वारा स्त्री की दुर्गति के प्रयासों के विरुद्ध स्त्रियों के संघर्ष को दर्शाया गया है। यहां खून भरी मांग, दीवार और स्मिता पाटिल की 'वारिस' की चर्चा करना भी प्रासंगिक होगा। इसमें महिलाओं की महिमा को शिद्दत के साथ प्रस्तुत किया गया।

खाली बैठे बनिये की उठाधरी !

प्रकाश पुरोहित

तब आम कलाइयों पर या आम घरों में घड़ी नहीं होती थीं। कुछ ही घरों में रेडियो भी होते थे। जिन घरों में होते थे, पूरी आवाज से बजाया करते थे कि राह चलते को भी यह पता होता था कि हिंदी में समाचार आ रहे हैं, यानी सुबह के आठ और रात के नौ बज रहे हैं। शास्त्रीय संगीत बज रहा है, दिन का समय है और विविध भारती से 'अनुरंजनी' आ रहा है तो दोपहर के एक बज रहे हैं। रात सवा आठ बजे नाटक जैसा कुछ चल रहा है तो यह 'हवामहल' ही होगा।

उस समय सिर्फ एक ही रेडियो चैनल हुआ करता था, बल्कि यह कहना ज्यादा ठीक रहेगा कि उस समय तक चैनल शब्द से परिचय भी नहीं हुआ था। कल्पना से बाहर था कि प्राइवेट रेडियो चैनल भी होते हैं। हां, श्रीलंका से बजने वाला रेडियो सीलोन था या फिर बहुत ही कम सुना जाने वाला मगर भरोसेमंद बीबीसी। रेडियो सीलोन का भी बुधवार की रात आठ बजे ही पता चलता था कि 'बिनाका गीतमाला' बजता था।

जिस भी घर में रेडियो होता था, बुलंद आवाज में बजता था, क्योंकि उस समय तक 'ममता सिंह' इस वाक्य का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था कि रेडियो सेट की कीजिए तेज आवाज, लेकिन आसपास वालों को ना हो एतराज, इसलिए गला फाड़ कर ही रेडियो बजते थे, खासतौर पर समाचार या फिल्मी गीत के समय। यदि आप एक किलोमीटर पैदल चलते हैं तो पूरे समाचार सुनते जा सकते हैं कि कहीं भी व्यवधान नहीं आता था। गाने भी इसी तरह राह चलते पूरे के पूरे सुनाई देते थे। कहीं क्रम नहीं टूटता था। लगता था जैसे रेडियो की आवाज आपका पीछा कर रही है या कान पकड़कर साथ-साथ चल रही है। घर के बाहर खड़े हो कर भी रेडियो श्रवण किया जाता था और कई संपन्न तो इसीलिए नहीं खरीदते थे कि इतने तो बजा रहे हैं, अपने रेडियो में कौन-सा नया प्रोग्राम आ जाएगा।

मीडियम-वेव और शार्ट-वेव होते थे, नहीं पता यह क्या बला थी, लेकिन इतना पता था कि मीडियम- वेव पर विविध भारती आता है और शार्ट-वेव पर रेडियो सीलोन या आल इंडिया उर्दू सर्विस। मीडियम- वेव तो घर की मुर्गी की तरह, जब चाहे लगा लो, लेकिन शार्ट-वेव के लिए ठीक वैसे ही जतन करने पड़ते थे, जैसे आजकल दूरस्थ गांव में पेड़ पर चढ़ कर मोबाइल नेटवर्क की तलाश। जिस घर की छत पर दो डंडों के बीच नेट लगी नजर आती थी, लोग ताड़ लेते थे कि यहां शार्ट-वेव चलता है। उन दिनों क्रिकेट कामेंट्री सुनने के लिए सर्दी में रजाई लेकर खुली छत पर रात गुजारी जाती थी कि विदेशों में तब दिन होता था। वेस्टइंडीज को जब पहली बार हमने उसके घर में हराया था, तब सुबह पांच बजे तक कामेंट्री चली थी कि समाचार की वजह से रुक-रुक कर रिकॉर्डेड आती थी।

विविध भारती के अनाउंसर भी स्टार होते थे कि आम युवा की यही हसरत होती थी कि एक बार तो रेडियो पर मौका मिल जाए। तब 'युववाणी' लोकल स्टेशन पर मालवा हाउस इंदौर से शाम पांच बजे आता था। किसी भी गली से निकल जाइए, एक घंटे का पूरा प्रोग्राम सड़क चलते सुन सकते थे। ये मीडियम-वेव पर ही आता था और कुछ छोटे ट्रांजिस्टर ऐसे होते थे, जिस पर सिर्फ यही बजता था। एक स्टेशन वाला ट्रांजिस्टर। सुबह छह बजे रेडियो के चेतने या बूट होने की धुन बजती थी और लोग बिस्तर छोड़ देते थे। यह धुन किसी अजान की तरह लगती थी, बल्कि कहा यह भी जाता है कि अजान से ही ली गई थी!

विविध भारती की गरिमा इसलिए भी थी कि उसके कार्यक्रम का वजन था, उनके नाम साहित्यिक थे। शास्त्रीय संगीत के लिए 'अनुरंजनी', 'संगीत सरिता', नाटक के लिए 'हवामहल', रात को बेहतरीन गाने के लिए 'छाया गीत', 'बेला के फूल', 'भूले-बिसरे गीत', 'जयमाला', 'पिटारा', 'मंथन, 'उजाले उनकी यादों के', 'सरगम के सितारे', 'त्रिवेणी', 'रंग-तरंग', 'बाइस्कोप की बातें', 'आज के मेहमान'... ये सारे नाम लगभग शुरू से ही हैं और सुनने वाले इन्हें अलग से याद नहीं करते कि कंठस्थ ही होते थे। प्रोग्राम देख कर समय पता लगता था और समय देख कर प्रोग्राम का अंदाजा लगा लिया जाता था। सूरज के उगने और अस्त होने की तरह, समय और दिशा तय।

रेडियो की ये 'विविध' बातें आज इसलिए याद आ रही हैं कि कल ही शर्त हार कर बैठा हूं। दोस्त के घर रेडियो पर पुराना गाना बजा तो अपना ज्ञान दिखाने के लिए पूछ लिया 'बताओ, इस समय कौन-सा कार्यक्रम चल रहा है?' किसी ने जवाब दिया 'छाया गीत!' मैं चिढ़ गया और बोला 'आप तो रहने ही दें...!' 'शाम पांच बजे छायागीत नहीं आता है। छाया गीत का समय रात दस बजे का है।' 'शर्त लगा सकता आपसे, ये छायागीत ही है!' अपने बरसों के अनुभव की ऐसी तौहीन तो देख नहीं सकता था, सो शर्त लगा ली। जब अनाउंसर ने छायागीत समाप्त की सूचना दी तो समझ नहीं आया, कहां जाकर मुंह छुपाऊं।

माना कि 2012 के बाद से सरकार ने पुराना सभी बदल दिया है, लेकिन ये रेडियो प्रोग्राम तो वैसे ही रहने देते! यहां तो इलाहाबाद या प्रयागराज जैसा कोई मसला नहीं था। असरानी का वह विज्ञापन याद आ गया, बिजली के बल्ब वाला 'सारे घर के बदल डालूंगा।' ठीक है, जो नया बना नहीं सकता है, बदल तो सकता ही है। पता किया कि 'समाचार' से लेकर 'हवामहल' तक सभी के समय बदल गए हैं। शायद ही कोई ऐसा बचा है, जिसका वक्त नहीं बदला हो। यही आसान भी तो है। 'खाली बनिया क्या करे, इधर का माल, उधर करे।'

स्त्री को खत : क्यों हर बात पर भयभीत होना?

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

स्त्री के लिये आज खुद के मंच से सारी स्त्रियों को संबोधित करने मंच पर उतारी गई हूँ! क्या-क्या छुपाये हो सब, देखो सब मुस्कुरा रही हो, खुश होने का दिखावा कर रही हो। सीने में हूक सी उठ रही है। आज मैं भी बोल डालूँ। मैं ही क्यों परिवार समाज की इज़्जत की दारोमदार हूँ। एक चिंगारी हम सबके सीने में छुपी है, लेकिन सब की तासीर अलग-अलग है। कहीं चिंगारी शरारा बन चुकी है, कहीं ज्वालामुखी, बस एक चोट और पहुँचाओं तुम, मैं फट पड़ूंगी, पर ठोकर या ठुकरायें जाने का इंतज़ार क्यों? कितने मौके तुमने उसे दिये पर उसने तुम्हें एक भी अवसर दिया अपनी बात कहने का? जो तुम इतना डर रही हो ना, कुछ नहीं होगा।

वो सोचते है हम विरोध नहीं कर सकते, तोड़ दो उनके भ्रम को, बता दो तुम्हें क्या क्या चुभता है। तुम्हारे कपड़े खाना, चलने बोलने का ढंग, तुम्हारे सामने दूसरी औरतो की तारीफ, तुम्हारे साथ अकेले मुँह बनाकर घूमना, दूसरों के साथ ठहाके लगाना, बात करने से बचना। उफ़्फ़ जाने कितनी बातें है जो तीर की तरह तुम्हें चुभाई जाती है। तुम भूल गई क्या यूनिवर्स ने तुम्हें भी एक तरकश दिया है, पर तुम अपने तीरों पर शहद लगा कर बैठ गईं।

तुम वहीं हो ना जिसे तुम्हारा पति, पिता या भाई बौड़म कहता है। तुम यूनिवर्सिटी टॉपर रही हो, आज भी वो अपनी अंग्रेजी की अर्जियां तुमसे लिखवाता है। तुलना में कहता है देखों बगल वाली मिसेज वर्मा को घर, काम दोनों संभालती है। तुम दिन भर मैले कपड़े में घूमती रहती हो। मन

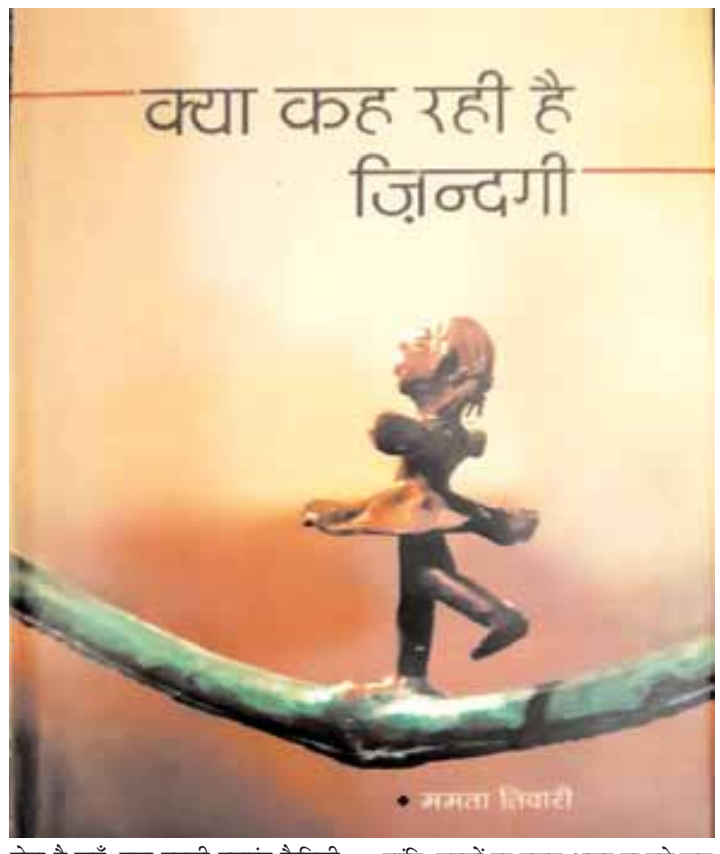

होता है कहूँ, क्या उनकी ज्वाइंट फैमिली है? क्या मेरे पास उनके जैसे नौकरों की फौज है? मुझे हर जगह बता के जाना होता है खैर उससे मुझे कोई परेशानी नहीं है। मेरी जाने की जगहें गिनी चुनी है, पर अगर मैं तुमसे पूछूं कहां जा रहे हो, कब आओगे (तुम्हें पता है मैं खाना लिये खुद भी भूखी इंतज़ार करूँगी) पर तुम्हारा जवाब होता है अपने काम से काम रखों।

तो कब तक जीना है ऐसे, परिवार में? शांति, बच्चों पर गलत असर ना पड़े कब तक ये बहाना चलाओगी? बच्चों ने पिता का रवैया देख सीख लिया भविष्य में उनसे जुड़ने वाली औरतों का कैसे सम्मान करना है। भिड़ने के बहाने मत बनाओ, तुम सोच रहे हो कि मैं तुमसे घर की शांति भंग करने को कह रही हूँ और तुम्हारे हृदय की शांति, बेचैनी जो तुम्हें खुश नहीं रहने देती फिर वो कहते है जब देखो तुम्हारा मुँह लटका रहता है, छाती पर जो दबाव का बोझ रखा है जो ब्लड प्रेशर बढ़ाता रहता है, जब देखो तब बीमार रहती हो का तमगा दिलाता है उसका क्या? साल के शुरू में ही सब बातें साफ कर लो। ये क्यों सोचती हो तुम्हारा घर, परिवार, बच्चे बिखर जाएंगे? हो सकता है 'चुपचाप सहन करने वाली औरत का इतना मुखर होना' उन्हें कुछ समझा जाए। कोशिश तो करनी होगी यूँ सड़ी गली जिंदगी से निकलने के लिए। ये क्या हर बात पर भयभीत हो कहती हो 'हाय मैं मर गई'... तूने खुद को रोज मरते देखा है

हाय मैं मर गई बिना दुपट्टे बाहर चली गई

हाय मैं मर गई सबके उठने के बाद सो के उठी

हाय मैं मर गई मैंने उनसे पहले खाना खा लिया

हाय मैं मर गई भगवान की पूजा भूल गई

किस किस बात पर मरेगी पगली

जिनपें मरना था उन पे तो ना मरी

जब दिन भर अपने मन का ना किया

जब आज अखबार ना पढ़ा

जब एक भी ठहाका ना लगाया

आज कुछ भी मन का ना खाया

जब एक अक्षर सफ़हे पर ना उतार पाई

जब स्त्री होना भूल गई तब तू मर गई

सचमुच मर गई।

हर समय भय में जीना, पुरूषों और समाज को हमारे लिये केअर टेकर बना देता है। तुम बच्चे अकेले पैदा कर ही हो। फिर किससे डर रही हो? मैं देख रही हूं तुम खड़ी हो गई हो और स्वयं से पूछ रही हो, क्या कह रही हो जिंदगी?

जिम्मेदारी

महिलाओं ने संभाली सुरक्षा व्यवस्था

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं को बधाई देते हुए कहा कि भारत की संस्कृति माँ और बहन प्रधान है, इसी का प्रभाव है कि हमारे देश का नाम भारत 'माता' से जोड़कर लिया जाता है। महिलाओं और बहनों की जिंदगी को बेहतर बनाने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों और योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। हमारा प्रयास है कि नारी सशक्तिकरण में मध्यप्रदेश देश में आदर्श राज्य के रूप में अपनी पहचान बनाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मुख्यमंत्री निवास पर मीडिया के लिए जारी संदेश में यह विचार व्यक्त किये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर मुख्यमंत्री निवास में सुरक्षा सहित समस्त व्यवस्थाएं संभाल रही महिला अधिकारियों कर्मचारियों को बधाई और शुभकामनाएं दी।मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सुरक्षा की जिम्मेदारी सुश्री बिट्टू शर्मा के पास थी, वहीं मुख्यमंत्री का वाहन इंस्पेक्टर सुश्री इरशाद अली चला रही थीं, कारकेड के वाहनों की जिम्मेदारी सुश्री सपना सहित अन्य महिला चालकों पर थी। ओएसडी का दायित्व अंडर सेक्रेटरी सुश्री श्रीलेखा क्षोत्रीय निभा रही थीं और प्रेस अधिकारी की जिम्मेदारी श्रीमती बिंदु सुनील और श्रीमती सोनिया परिहार के पास रही। फोटोग्राफी की जिम्मेदारी सुश्री जिया श्रीवास्तव, कृति मानिक पुरी, असमा नकवी और आकांक्षा मीणा ने निभाई। कारकेड की पायलेट निरीक्षक रेणू मुरार थीं।

आशीर्वादी जुमलों का एक सीमित संसार

जुगलबंदी

समीर लाल 'समीर'

लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और वरिष्ठ व्यंग्यकार हैं।

मानसिक रूप से तिवारी जी उम्र के उस पड़ाव में आ गए हैं जहाँ मात्र आशीर्वाद देने के सिवाय और कोई काम नहीं रहता। दरअसल, उम्र से तो वह लगभग अभी 60 के आस पास ही पहुँच रहे होंगे। नेता होते तो युवा और ऊर्जावान कहलाते और अभिनेता होते तो किसी फिल्म में नई आई अभिनेत्री के साथ नाच रहे होते, मगर तिवारी जी ने उम्र का वो पड़ाव जल्दी इसलिए प्राप्त कर लिया क्यूंकि उनके पास वैसे भी कोई काम नहीं रहता है। काम न रहने को उन्होंने उम्र के पड़ाव से जोड़ दिया। यह उनके मानसिक उत्कर्ष का प्रमाणपत्र है।

अब वे अपने से बड़े उम्र की महिलाओं एवं पुरुषों को भी बेटा बेटी बच्चा आदि से संबोधित करने लगे हैं। पड़ोस में रहने वाली 70 वर्षीय महिला सुशीला ने जब नमस्ते किया तो बोले 'अरे सुशीला बिटिया - खूब खुश रहो। बड़ा सुखद लगा सुनकर कि तुम अभी से इत्ती कम उम्र में ही नानी बन गई। प्रभु का बहुत आशीर्वाद है। अब नाती पोतों के साथ खूब खेलो। जुग जुग जिओ।' अब सुशीला भी ठहरी महिला। कोई किसी भी उम्र में महिलाओं के इतने उच्चतम सम्मान 'इत्ती कम उम्र' से नवाज़ दे तो उसके लिए तो वह पद्म श्री से भी बड़ा सम्मान कहलाया। वो भी इसी सम्मान से लहालहोट हो तिवारी जी के चरण स्पर्श कर गई। तिवारी जी थोड़ा पीछे हटे और कहने लगे 'अरे नहीं नहीं, हमारे यहां बच्चियों से पैर नहीं छुलवाते।' लेकिन तब तक सुशीला पैर छू चुकी थी, अतः सर पर हाथ धर कर पुनः आशीर्वाद देते हुए 'सदा सुहागन रहो' कहने जा ही रहे थे कि एकाएक याद आ गया कि सुशीला के पति को गुजरे तो सात साल हो गए हैं। अतः सदा के साथ खुश रहो लगा कर आशीर्वाद रफू कर दिया। रटे रटाए वन लाईनर वाले आशीर्वाद भी सतर्कता की दरकार रखते हैं। सही कहा गया है 'सतर्कता हटी और दुर्घटना घटी'। अभी अभी तिवारी जी की फजीहत होते होते बच ही गई।

आशीर्वादों का भी अपना एक वाक्य कोष होता है। सारे बुजुर्ग उसी में से उठा उठा कर आशीष दिया करते हैं। भाषा से भी यह अछूते हैं। लगभग सभी भाषाओं में आशीर्वाद का अंदाज और अर्थ एक सा ही होता है। चुनावी जुमलों की तरह ही आशीर्वादी जुमलों का एक सीमित संसार है मगर लुटाया दोनों को ही हाथ खोल कर जाया जाता है।

आशीर्वाद पाने वाला भी जानता है कि जेब खस्ता हाल में है। मंहगाई ऐसी कि निहायत जरूरत तक के सारे सामान नहीं जुटा पा रहे हैं। पेट्रोल भरवाने जाओ तो गैलन तो सोचना भी पाप हो गया है बल्कि लीटर की जगह मिली लीटर चलन में आने को तैयार हो रहा है। इस दौर में जब घर से मंहगाई और दुश्वारियों से जूझने निकलो और पान की दुकान पर बैठे तिवारी जी मुस्कराते हुए आशीर्वाद देने मे जुटे मिलें 'खूब खुश रहो। दिनोंदिन ऐसे ही तरक्की करते रहो।' तब सिर्फ भीतर भीतर कोफ्त खाने के और क्या हो सकता है। बुजुर्ग की उम्र का लिहाज ऐसा कि कुछ कह भी नहीं सकते। बुजुर्ग भी अपनी उम्र का पावर जानता है। नेता भी तो अपने पावर के चलते जुमले पर जुमले उठाए रहते हैं और आम जानता भी सब कुछ जानते समझते भी सिवाय कुढ़ कर रह जाने के क्या कर सकती है।

घंसू, जिससे विगत में तिवारी जी का शराब पीने से लेकर गाली गलौज तक का करीबी नाता रहा, उसे भी आजकल वह 'बेटा, सदा खुश रहो- ऐसे ही खूब तरक्की करते रहो ' का आशीर्वाद देते हुए न थकते हैं। घंसू भी आश्चर्य चकित सा तिवारी जी का मुंह ताक रहा है। जब उम्र के पाँच दशक से ज्यादा समय में आजतक कुछ भी कर ही नहीं पाया और यह बात तिवारी जी भी जानते हैं तो ये 'ऐसे ही तरक्की करते रहो' में किस तरक्की का जिक्र कर रहे हैं?

अभी घंसू इस विषय में सोच ही रहा था की उसे याद आया कि कुछ साल पहले जब एक मंच से नेता जी का भाषण हो रहा था। नेता जी ने कहा था 'आप और आपका धर्म संकट में हैं। मैं जीतते ही आपको संकट से उबारूँगा।' तब भी जिन्हें वह संकट में बता रहे थे, उन लोगों को खुद ही नहीं पता था कि वो और उनका धर्म संकट में हैं। वो भी तो यही सोच रहे थे कि नेता जी किस संकट से उबारेंगे, जब कोई संकट है ही नहीं। तब उस वक्त के युवा और ऊर्जावान तिवारी जी ने ही बताया था कि इसे जुमला कहते हैं। चुनाव में काम आता है। याद कर लो और जब चुनाव लड़ोगे तो काम आएगा। तब तुम भी यही बोलना।'

बस, घंसू भी अब तिवारी जी की बात 'ऐसे ही खूब तरक्की करते रहो' का भावार्थ समझ गया। यह बुजुर्गों का एक आशीर्वादी जुमला है। याद कर लो और जब बुजुर्ग हो जाओगे तो काम आएगा। ऐसा ही पुश्त दर पुश्त ये सिलसिला चलता आया है और ऐसे ही आगे भी चलता रहेगा।